



सत्यमेव जयते

अंक - 36

तारु



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गरवी गुजरात विशेषांक



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), राजकोट कार्यालय
एवं अहमदाबाद, शाखा कार्यालय
गुजरात



‘गिरनार’ 35 वें अंक का विमोचन



हिन्दी पखवाड़ा - 2022



गिरनार परिवार

प्रकाशन

“गिरनार”

कार्यालयीन हिंदी गृह-पत्रिका

प्रकाशक

महालेखाकार

(लेखा एवं हकदारी),
राजकोट का कार्यालय एवं
अहमदाबाद शाखा कार्यालय,
गुजरात

अंक - 36
गिरनार
2022-23

मूल्य

राजभाषा हिंदी के
प्रति निष्ठा व समर्पण

मुद्रक

अक्षर ग्राफिक - राजकोट



श्री आर. के. सोलंकी

महालेखाकार

संरक्षक



श्री सजी थॉमस

वरिष्ठ
उप महालेखाकार



सुश्री
वी. एम. बालिगा

उप महालेखाकार

प्रकाशन सलाहकार समिति



श्री सुनील जे. पारेख

वरिष्ठ लेखा अधिकारी



सुश्री
आशा मधु नायर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मंडल



सुश्री स्वाति कुमार

हिंदी अधिकारी



सुश्री नंदिनी गर्ग

सहायक
लेखा अधिकारी



श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल

वरिष्ठ
हिंदी अनुवादक



श्री सुखदेव गोयल

कनिष्ठ
हिंदी अनुवादक

मुख्य पृष्ठ विवरण- गुजरात पश्चिमी भारत में स्थित एक राज्य है। इस राज्य की राजधानी गांधीनगर है। कच्छ, सौराष्ट्र, काठियावाड़, हालार, पांचाल, गोहिलवाड़, झालावाड़ उसके प्रादेशिक सांस्कृतिक अंग हैं। इनकी लोक संस्कृति और साहित्य का अनुबन्ध राजस्थान, सिंध और पंजाब, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के साथ है। विशाल सागर तट वाले इस राज्य में इतिहास युग के आरम्भ होने से पूर्व ही अनेक विदेशी जातियाँ थल और समुद्र मार्ग से आकर स्थायी रूप से बसी हुई हैं। इसके उपरान्त गुजरात में अट्टाईस आदिवासी जन-जातियाँ हैं। जन-समाज के ऐसे वैविध्य के कारण इस प्रदेश को भाँति-भाँति की लोक संस्कृतियों का लाभ मिला है।

-संकलन- इंटरनेट

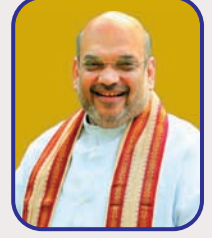
अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	प्रकार	रचनाकार	पृ.सं.
1	गुजरात की शान : देश की आन	कविता	हिंदी अनुभाग	12
2	गुजरात के लेखक	लेख	सुश्री ऐनी जीजो	13
3	गुजराती लोक नाट्य भवाई	लेख	श्री अभिषेक पंड्या	16
4	गुजरात के महान संत के जन्म शताब्दी महोत्सव	लेख	श्री एस. जे. पारेख	18
5	गुजरात की मिट्टी की खुशबू	लेख	सुश्री रिंकी गुप्ता	21
6	गुजरात की सुप्रसिद्ध महिलाएँ	लेख	सुश्री जीजा कुरूप	22
7	गुजरात की शान - गिर गाय	लेख	श्री राकेश कुमार	26
8	गुजरात के मेले व त्योहार	लेख	सुश्री आर. के. शाह	26
9	गुजरात का वासद आश्रम	लेख	सुश्री कोकिला. डी. पाठक	30
10	गर्व है गुजरात पर	लेख	सुश्री चारु धारिया	32
11	गुजराती साहित्य एक परिचय	लेख	श्री सुखदेव गोयल	36
12	एकता की प्रतिमा - स्टैच्यू ऑफ यूनिटी	लेख	श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल	37
13	मोढ़ेरा सूर्य मंदिर - एक अनोखी किरण	लेख	श्री प्रशांत सिंह	41
14	राजकोट की पहचान	कविता	श्री दीपक परमार	43
15	गुजरात का पतंग महोत्सव	लेख	सुश्री नीलम बेरवाल	44
16	मारु राजकोट	लेख	सुश्री स्वाति कुमार	48
17	कार्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ			53
18	हिंदी पखवाडा-2022			54

अमित शाह

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री

भारत सरकार



प्रिय देशवासियों !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाएं संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गई थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है की आजादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नए संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए की राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों / विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है की वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय-समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 367 मंत्रालयों में से 15 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही है। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुइज में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13-14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस-2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य सम्मेलन शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी-अपनी मातृभाषा से निशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के ई-महाकौश में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और ई-सरल हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत् शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्ष से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यही पुष्पित पल्लवित हुई है और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव-संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे से के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियों ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प ले कि अपनी भाषा पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश-विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृत काल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइए, आज संकल्प ले कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं

जय हिंद !

नई दिल्ली

14 सितंबर 2022


अमित शाह



शाखा कार्यालय, अहमदाबाद



शाखा कार्यालय, अहमदाबाद



शाखा कार्यालय, अहमदाबाद



महालेखाकार का संदेश



हमारे कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'गिरनार' के 36^{वें} अंक “गुजरात विशेषांक” का अनावरण करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी को स्थापित करने और बढ़ाने में हिंदी पत्रिका की अहम् भूमिका रही है।

पत्रिका न सिर्फ कार्यालय की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती है वरन् कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों में भी राजभाषा हिंदी के प्रति स्नेह को भी दर्शाती है।

मेरा संवैधानिक दायित्व है कि राजभाषा प्रचार-प्रसार हो एवं इसकी प्रगति सुनिश्चित होती रहे, जिसके लिए हमारी पत्रिका ने अपना लघुतम योगदान दिया है। पत्रिका भाषाई विकास के माध्यम के साथ-साथ कार्यालय के कार्मिकों की साहित्यिक अभिव्यक्ति को प्रकट करने का माध्यम भी है। मुझे विश्वास है कि सदा कि भाँति यह विशेषांक भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

मैं, पत्रिका के कुशल संपादन, सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

जय हिंद !!!!!

वरिष्ठ उप महालेखाकार का संदेश



हमारे कार्यालय की पत्रिका 'गिरनार' के 36^{वें} अंक-"गुजरात विशेषांक" के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। भारत में राजभाषा हिंदी जनसाधारण से जुड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी है और कार्यालयीन कार्यों में हिंदी की प्रगति भी आवश्यक है, इस हेतु हमारी पत्रिका हिंदी भाषा की प्रगति करने में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है। कार्यालयीन पत्रिका, कार्यालयों के बीच एक भावात्मक सेतु का कार्य करती है।

कार्यालय की पत्रिका के माध्यम से कार्यालय में हुई विभिन्न गतिविधियों एवं क्रियाकलापों की झलक भी देखने को मिलती है और साथ ही हमारे कार्मिकों की चिंतन प्रक्रिया से भी अवगत कराती है।

मैं आशा करता हूँ कि 'गिरनार' पत्रिका का यह विशेषांक राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं इसके प्रति अभिरूचि तथा जागरुकता उत्पन्न करने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा। 'गिरनार' के प्रकाशन में सहयोगी सभी कार्मिक प्रशंसा के पात्र हैं। 'गिरनार' के उत्तरोत्तर विकास एवं स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

जय हिंद !!!!!

उप महालेखाकार का संदेश



मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका **“गिरनार”** के प्रकाशन की निरंतरता के क्रम में इसका 36 वां **“गुजरात विशेषांक”** प्रकाशित किया जा रहा है।

केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली राजभाषा पत्र-पत्रिकाएँ सरकार और जनता के मध्य एक सेतु की तरह कार्य करती है। आम जन की भाषा होने के कारण हिंदी में वह क्षमता है, कि यह अपनी अभिव्यक्ति की सरलता के चलते समाज के हर क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान स्थापित कर लेती है।

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालयीन हिंदी पत्रिका **“गिरनार”** का 36 वां अंक समर्पित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। इससे सभी में सकारात्मक चिंतन क्षमता का विकास होगा। साथ ही राजभाषा के प्रयोग में उत्तरोत्तर विकास हो इसके लिए हिंदी भाषा को सभी कार्यों में एवं सभी स्तरों पर अपनाया जाए।

॥ जय हिंद, जय गुजरात ॥

वरिष्ठ लेखा अधिकारी का संदेश



कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका '**गिरनार**' के 36 वें अंक को आप सुबुद्ध पाठकों को सौंपते हुए एक सुखद अनुभूति हो रही है। इस वर्ष "**आज़ादी के अमृत महोत्सव**" के उपलक्ष्य में इस पत्रिका को "**गुजरात विशेषांक**" के रूप में आप सबके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रगति क्रम में एक मुख्य सोपान है।

डिजिटलीकरण के इस युग में जहाँ सभी कार्यालयों में ई-ऑफिस हो रहा है, इसके चलते ई-मेल, ई-फाइल आदि का प्रयोग किया जा रहा है और इसी क्रम में सूचना व प्रौद्योगिकी के माध्यमों द्वारा हिंदी में कार्य करना भी आसान हो गया है, जिसके फलस्वरूप आप सबके समक्ष ई-पत्रिका का सफल प्रकाशन किया जा रहा है।

इस अंक को उपयोगी एवं सुरुचिपूर्ण बनाने का यथा साध्य प्रयास किया गया है। पिछले 35 अंकों की तरह इस वर्ष भी "**गुजरात विशेषांक**" के माध्यम से पत्रिका में समाहित रचनाएं अपने नए रंग बिखेरने को तैयार हैं।

'**गिरनार**' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं '**गिरनार**' परिवार और रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

आप सभी के विचारों, सुझावों तथा सम्मतियों की प्रतीक्षा में.....

जय हिंद !!!!!



वरिष्ठ लेखा अधिकारी का संदेश



सुश्री आशा मधु नायर

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की वार्षिक पत्रिका **“गिरनार”** के 36 वें अंक **“गुजरात विशेषांक”** का प्रकाशन किया जा रहा है। सभी रचनाकारों, संपादकों के सतत् प्रयास के फलस्वरूप पत्रिका की विशिष्टता एवं सौंदर्य में निरंतर निखार आया है।

भाषा किसी भी राष्ट्र की संस्कृति की वाहक होती है और इसके लिए भाषा में सरलता तथा बोधगम्यता रूपी गुण होना आवश्यक है। हिंदी में इन गुणों का समावेश है जिसके कारण यह विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के समूह में सुशोभित है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अग्रिम बधाई तथा गिरनार पत्रिका **“गुजरात विशेषांक”** के निरंतर प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ।

॥ जय हिन्द, जय गुजरात ॥

आपके प्रतिभाव-पत्र

AGAE

From: Uday Pratap Singh <hindicell.karae@cag.gov.in>
Sent: 21 October 2022 14:51
To: AG AE Gujarat Rajkot
Subject: गिरनार पत्रिका पर पावती प्रेषण

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KARNATAKA, BENGALURU
सं.प्र.म.ले.(ले.व.ह.)/हि.क./गृ.पत्रिका.प.प्र./2022-23/120
दिनांक: 13.10.2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) का कार्यालय,
गुजरात, राजकोट

विषय- हिंदी वार्षिक ई-गृह पत्रिका "गिरनार" के 35वें अंक की पावती।

महोदय,
आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-गृह पत्रिका "गिरनार" के 35वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की साज-सज्जा स्तरीय है। पत्रिका में समाहित सभी लेख व कविताएँ पठनीय व सराहनीय हैं। विशेष रूप से "देवदूत स्वरूप पड़ोसी", "पिता" एवं "सुखी और खुशी" आदि रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

ह/-

वरिष्ठ लेखाधिकारी/ मा.सं.वि.

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

कार्यालय - प्र. महालेखाकार (ले.प.-1), ओडिशा, भुवनेश्वर

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

O/o THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-1), ODISHA, BHUBANESWAR



सं.- हि.प्र.को./पावती(14)/2022-23/167

दिनांक- 17.11.2022

सेवा में,

वरि. लेखा अधिकारी / हिंदी
कार्या- महालेखाकार (ले. व ह.)
गुजरात, राजकोट - 360001

विषय- हिन्दी पत्रिका "गिरनार" के 35वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "गिरनार" के 35वें अंक की पावति हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का छायांकन मनमोहक है। पत्रिका की समस्त रचनाएँ पठनीय एवं समग्रणीय हैं। विशेषतः 'लेखापरीक्षा जागरूकता', 'भारतीय महिला : राष्ट्र निर्माण की अद्वितीय स्त्री', 'मजदूर की व्यथा' एवं 'इस भागती जिंदगी में वक्त कहाँ है?' रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करना सराहनीय है। पत्रिका में समाहित समस्त लेख विचार प्रधान, प्रेरक एवं जीवनोपयोगी हैं। पत्रिका में दर्शायी गयी कार्यालयी गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ाते हैं।

पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

विशेष
17/11/22
हिन्दी अधिकारी

सं.हि.प्र.मा.-2022-23/120



प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं
पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का
कार्यालय, बेंगलूरु-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER
AUDIT BOARD, BENGALURU-560001.

दिनांक - 10.10.2022

सेवा में,

वरि. लेखा अधिकारी / हिन्दी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),
गुजरात, रस कोस रोड राजकोट - 360001

विषय-प्रशंसा-पत्र

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका "गिरनार" का 35 वाँ अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री सजी थोमस का लेख "ईसानियत" श्री सुमेह विजयवर्गीय का लेख "भारतीय महिला राष्ट्र निर्माण की अद्वितीय स्त्री" सुश्री सी. एस. नारेजा कि कविता "आज की पीढ़ी के नसीब में ये नहीं हैं" एवं श्री सुखदेव गौयल कि कविता "मजदूर की व्यथा" आदि जानवर्धक हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)



भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार
बीरचंद पटेल मार्ग, पटना-800 001

संख्या 12-13-14/पावती/2022-23/167/68
No.
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna - 800 001
Date: 15.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी-हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदार)
गुजरात रसकोस रोड, राजकोट-360001

विषय: हिन्दी ई-पत्रिका "गिरनार" के 35 वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "गिरनार" के 35 वें अंक (ई-प्रति) की पावति हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का अंतराल तुच्छ तथा साज-सज्जा अत्यंत ही आकर्षक है।

पत्रिका की सभी रचनाएँ स्तरीय हैं। विशेषतया श्री सुखदेव गौयल का लेख "मजदूर की व्यथा" श्री सुश्री कुमारी का कविता "सजदूर की व्यथा" श्री सुखदेव गौयल की कविता "मजदूर की व्यथा" तथा सुश्री आर.के. साह का लेख "गुड़ी और चुल्लू" विशेष रूप से पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं।

गृह हिन्दी पत्रिका "गिरनार" कार्यालय की वाणिज्यिक पत्रिका को प्रकाशित कर एक सार्वजनिक सेवा प्रदान करता है। यह इस प्रकार से राजभाषा हिन्दी की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान देता रहे, इसी आशा के साथ समस्त अख्यक्षेत्रीय मण्डल एवं एजेंसियों को पुनः बधाई एवं आभार।

भारतीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी-हिन्दी

दूरभाष-Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2506091, 2506283 ई-मेल-ए.ए.ए.ए./EPABX-2223757, 2228320
फैक्स-Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई-मेल-Email-agaubihar@cag.gov.in, वेब-वेबसाइट-Web : 123

आपके प्रतिभाव-पत्र



सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्षपरिष्कारप्रतिष्ठान/2022-23/1/5/6
दिनांक: 03.10.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक), गुजरात,
रेसकोर्स रोड, राजकोट-360 001

विषय: गिरनार अंक-35 का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'गिरनार' के 35 वें अंक की प्रति दिनांक 03.10.2022 को ई-मेल द्वारा प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। रचनाओं के चयन की दृष्टि से यह अंक अत्यंत ही सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, सुविपरीत एवं पठनीय हैं। विशेष रूप से 'ईशानियता', 'देवदूत-नक्षत्र' पड़ोसी, 'लेखापरीक्षा जागरूकता', भारतीय महिला: राष्ट्र निर्माण की अद्वितीय शक्ति, 'समय', मजदूर की व्यवस्था, तथा 'मिता' आदि रचनाएँ अति प्रेरणादायी एवं प्रसंसीय हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों तथा संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी व प्रशिक्षण कक्षा)

दूरभाष: 0172-2666704, 2615377 फ़ैक्स: 0172-2610488, 2607732 ई-मेल: agasharyana@cag.gov.in D:\Hindi
C:\Hindi\Hindi\Hindi_Marg\doc



सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (ओ व ह) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
दूरभाष नं. 2610967, 2613211, 2615382 फ़ैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610967, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E-mail - agasharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्षा/प्रति.प्रति./2022-23/ 216
दिनांक: 29.11.2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),
गुजरात।

महोदय,

विषय: कार्यालयीन हिंदी गृह-पत्रिका 'गिरनार' के 35वें अंक के प्रेषण के सम्बन्ध में।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 03.10.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिंदी गृह-पत्रिका 'गिरनार' के 35वें अंक के नवीनतम अंक की प्रति साधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्रमती सजी थोमस का लेख 'ईशानियता', श्री राम सिंह का लेख 'लेखापरीक्षा जागरूकता', श्री सुमोह विजयवर्गीय का लेख 'भारतीय महिला राष्ट्र निर्माण की अद्वितीय शक्ति' एवं सुश्री स्वाति कुमार का लेख 'मध्यरात में पृष्ठसवारी' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्री अनिल अहलान (अकेला) की कविता 'पल कोई ना', श्री मुकेश कुमार शर्मा की कविता 'समय' एवं श्री अभिषेक पंड्या की कविता 'इस आगती जिन्दगी में वक्त कहाँ है' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

पुष्पा सिंह
हिंदी अधिकारी



सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) केन्द्रीय का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI



सत्यमेव जयते

सं प्रतिलेख(के) हिंदी अनुपाग/14-02/2022-23/88

दिनांक: 12.10.2022

सेवा में,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
गुजरात, रेसकोर्स रोड,
राजकोट-360001

विषय: हिंदी- पत्रिका 'गिरनार' के 35वें अंक की प्रति के संबंध में।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषापत्रिका 'गिरनार' के 35वें अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं स्पष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएँ एक से अधिक एक ही विशेषता: सुभी स्वाति कुमार कृत 'माथेरान में सुखवासी' में निहित स्थानों से प्रगति के साथ फोहर सातपुत्र सहजी हैं, श्री राहुल कुमार कृत 'आशा' एवं सुभी कलवती यादव कृत 'चलते हुए' अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सरल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

लेखापरीक्षा भवन,
361, अन्ना सालू, तैयम्पेट,
चेन्नई - 600 018.

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91-044 - 24339524, E-mail : dgacchennai@cag.gov.in

"LEKHA PARIKSHA BHAVAN",
361, ANNA SALAI, TAYAMPET,
CHENNAI - 600 018.



सत्यमेव जयते

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण
एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुस्तरीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
ए.जे.सी. रोड रोड 234/4, कोलकाता-700020
फोन : 033-2289/4111/12/13 फ़ैक्स: 033-2289-4060
ई-मेल:-bresd@kolko@cag.gov.in

12 DEC 2022
दिनांक:-09.12.2022

संख्या हि.अ./1(17)/21/2012-13/2021-22/451

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
गुजरात,
रेसकोर्स रोड,
राजकोट-360001

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका 'गिरनार' के 35वें अंक की अभिसूचीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'गिरनार' के 35वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सार्थक धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा सुदृढ़ एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर सजी थोमस जी का आलेख 'ईशानियता', श्री राजेश चन्द्र तिवारी जी का आलेख 'वचनबद्धता की महता', श्री विजेन्द्र कुमार बेरवाल जी का आलेख 'मेरी पहली राजकोट यात्रा', श्री मनीष एम. मोटवानी जी का आलेख 'ब्लैक बक', सुश्री सी.एस. नारेजा जी की कविता 'आज की पीढ़ी के नसीब में ये नहीं हैं।' और श्री अभिषेक मांड्या जी की कविता 'इस आगती जिंदगी में वक्त कहाँ है?' अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'गिरनार' इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

हस्ताक्षर:-

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

हिन्दी अनुभाग

गुजरात की शान: देश की आन

पर्यटन की दृष्टि से ...

श्वेत संगमरमर सा रेगिस्तान - 'रण' - कच्छ में,

पाटण की बावडी - 'रानी की वाव' - 100 रुपये के नोट में,

बारह 'ज्योतिर्लिंग' में से प्रथम सोमनाथ में,

देश का दूसरा 'सूर्य मंदिर' मोढेरा में।

साबरमती 'रिवर फ्रंट' है अनोखी पहल,

गिरनार 'रोप-वे' कठिन डगर को बनाती सरल।

'एकता की मूर्ति' (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी) ने पाया
दुनिया की सबसे बड़ी मूर्ति का खिताब,

अब 'नरेंद्र मोदी स्टेडियम' ने भी पाया है दुनिया में नाम।

'सी-प्लेन' साबरमती रिवरफ्रंट से होता सपना साकार

'भारत-पाक सीमा नदबेट' से होता सैनिकों को सलाम ॥

जय हिंद !!!



गुजरात के लेखक

सुश्री ऐनी जीगो
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



कहते हैं कि "किताबों जितना वफादार कोई दोस्त नहीं होता।" या "किताबें एक विशिष्ट सुवाहय(पोर्टेबल) जादू हैं।" अब किताबें बनती कैसे हैं? लेखकों, कवियों के कारण! "लेखक" शब्द को एक व्यापक परिभाषा में कहा गया है: "एक लेखक" वह व्यक्ति है जिसने किसी चीज़ की उत्पत्ति की या उसको अस्तित्व दिया है "और जिसका लेखकत्व उस चीज़ के लिए ज़िम्मेदारी निर्धारित करता है जिसे बनाया गया था।" किसी भी विषय उद्देश्य के लिए शब्दों को कागज पर उतारना लेखक का मूल कार्य होता है, और यह कहते सुना ही है कि 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि'। इसी परिप्रेक्ष्य में गुजरात के लेखकों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है। गुजराती उपन्यास व्यापक रूप से लोकप्रिय हैं और संस्कृति में समृद्ध हैं।

- ▶ गुजराती साहित्य 15वीं सदी(1450 से 1850) में सृजित किया गया है।
- ▶ लेखक अपनी कलम से कल्पनाओं और भावनाओं को रुचिकर और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने में सफल होते हैं।
- ▶ साहित्य अभ्यास क्षेत्र की वज़ह से सृजकों के सृजनात्मक लेखन क्षमता में वृद्धि हुई जो समाज के लिए सदैव ही उपयोगी सिद्ध हुआ।



कन्हैयालाल मानेकलाल मुंशी: जिन्हें उनके कलम नाम 'घनश्याम व्यास' के नाम से जाना जाता है। वे एक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ, लेखक और गुजरात राज्य के शिक्षाविद् थे। पेशे से वकील, बाद में उन्होंने लेखन और राजनीति की ओर रुख किया। वे गुजराती साहित्य में एक जाना-पहचाना नाम हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तकें "गुजरात नो नाथ", "पतन नी प्रभुता" हैं। हिंदी में 'कृष्णावतार' है जो कि हिंदू भगवान श्रीकृष्ण के जीवन की 7 पुस्तक रीगलिंग कहानी है।



गोवर्धनराम माधवरम त्रिपाठी: 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में गुजराती भाषा के उपन्यासकार थे जो कि दूसरे अन्य उपन्यासकारों में (1855-1907) प्रमुख थे। उन्हें उनके चार खंड वाले उपन्यास 'सरस्वतीचंद्र' के लिए जाना जाता है, जिसे गुजराती साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों में से एक माना जाता है। उपन्यास 19वीं शताब्दी के शुरुआती दौर में गुजरात के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। उनका सरस्वतीचंद्र पहला सामाजिक उपन्यास था जो एक क्लासिक बन गया।



अशोक वावड़ा: जिन्हें उनके कलम नाम 'बेदिल' से भी जाना जाता है, वे गुजरात, भारत के एक गुजराती कवि, लेखक और आलोचक हैं। उनकी कविता संग्रह "दलखी थी साव छुटण" को 2013 में साहित्य अकादमी द्वारा युवा पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।



धूरुभाई प्रेमशंकर ठाकर : एक भारतीय गुजराती लेखक थे, जिन्हें भी गुजराती भाषा के 25-खंडों के विश्वकोश, गुजराती विश्वकोश बनाने के लिए जाना जाता था। 2014 में भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण' (मरणोपरांत) से सम्मानित; जो शिक्षा के प्रति उनकी व्यापक सामाजिक विशेषज्ञता के साथ-साथ साहित्य के प्रति उनकी अमूल्य सेवा का द्योतक है।



वर्षा महेंद्र अदलजा : एक भारतीय गुजराती भाषा की नारीवादी उपन्यासकार, नाटककार और वार्ताकार हैं, जिन्होंने अपने उपन्यास 'अंसार' के लिए गुजराती भाषा के लिए 1995 का साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता। वह एक नाटककार भी हैं, मंचीय नाटकों, पटकथाओं और रेडियो के लिए लिखती हैं। इनका क्रॉसवर्ड तीन पीढ़ियों में फैला एक महान कृति ऐतिहासिक उपन्यास है।



सरोज पाठक : गुजराती उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार थीं। वे 1956-57 में आकाशवाणी से जुड़ी थीं। वह 1957-58 में सोवियत सूचना सेवा से भी जुड़ी थीं। वह 1964 से बारडोली कॉलेज में प्रोफेसर थीं। उन्होंने गुजरात मित्रा में नारी संसार स्तंभ में निबंध लिखे। उनके निबंध संसारिका (1967) और अर्वाचीन (1976) में संकलित हैं। 'प्रतिपदा' (1962) उनका अनुवाद कार्य है।



मनीषा जोशी : गुजराती भाषा की कवयित्री और पत्रकार हैं। वह कंदरा, कंसारा बाजार, कंदमूल और थाक सहित चार कविता संग्रहों की लेखिका हैं। उनके कविता संग्रह कंदमूल को गुजरात साहित्य अकादमी का 2013 का प्रथम पुरस्कार मिला। आधुनिक गुजराती कविता में उनके योगदान के लिए उन्हें 1998 में संस्कृति प्रतिष्ठान द्वारा संस्कृति पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था।



एव.एन.गोलिबार : जिन्हें उनके कलम नाम 'एटम गोलिबार' से भी जाना जाता है, गुजराती साप्ताहिक चक्रम चंदन के संपादक हैं। वह गुजराती पल्प फिक्शन लेखक भी हैं, जो ज्यादातर हॉरर और क्राइम थ्रिलर लिखते हैं। वह एक गुजराती दैनिक 'नवगुजरात समय' में साप्ताहिक कॉलम गजब जवाबो में हास्यपूर्ण तरीके से सवालों के जवाब देते हैं।



काजल ओझा वैद्य : एक लेखक, पटकथा लेखक, रेडियो व्यक्तित्व और अहमदाबाद, भारत की पत्रकार हैं। उन्होंने शुरुआत में एक पत्रकार और अभिनेत्री के रूप में काम किया। उन्होंने उपन्यास, लघु कथाएँ और निबंध सहित 56 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने सोप ओपेरा और फिल्मों की कहानियाँ, संवाद और स्क्रिप्ट लिखी हैं। उन्होंने कई प्रस्तुतियों की कहानी, पटकथा और संवाद लिखे। उन्होंने हम प्रोडक्शन के लिए कुछ नाटक लिखे। उन्होंने तीन गुजराती टेलीफिल्म्स की कहानी, पटकथा और संवाद लिखे। उन्होंने कई टीवी सोप ओपेरा के लिए कहानी लिखी।



नज़ीर मंसूरी : एक गुजराती भाषा के उपन्यासकार और लघु कथाकार हैं। उनकी कहानियों का अनुवाद सचिन केतकर और हेमांग देसाई ने किया। वह नवसारी के एक कॉलेज में प्रोफेसर हैं। 1997 में उनकी लघुकथा "भूथर" के लिए उन्हें रचनात्मक कथा के लिए कथा पुरस्कार मिला। 1999 में उन्हें संस्कृति प्रतिष्ठान पुरस्कार मिला। उनकी

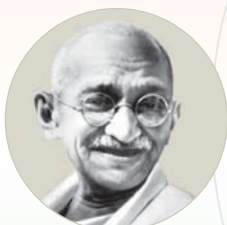
कहानी "भुथर" को कथा फाउंडेशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित द बेस्ट ऑफ़ द नाइनटीज़ फिक्शन के लिए चुना गया था। उनकी कई कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है जो इंडियन लिटरेचर और न्यू क्वेस्ट में छपी हैं।



जितेश डोंगा : एक गुजराती भाषा के उपन्यासकार और कथा साहित्य के लेखक हैं। उनके उपन्यास विश्वमानव (2014) और उत्तरी ध्रुव (2017) हैं। किताब चार सच्ची कहानियों से प्रेरित थी। अंतर वलोनू (2016) उनकी अनुकूलित कहानियों का संग्रह है।



कुंदनिका कपाड़िया : गुजरात की एक भारतीय उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार थीं। 'स्नेहधन' उसका कलम नाम था। उनका पहला उपन्यास परोध थाटा (1968) था, उसके बाद अग्निपिपासा (1972) आया। उन्होंने सात पगला आकाशमा (सेवेन स्टेप्स इन द स्काई, 1984) लिखा। इसे उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है, जिसके लिए उन्हें 1985 में गुजराती के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इनको गुजराती साहित्य परिषद और गुजरात साहित्य अकादमी से कई पुरस्कार मिले।



मोहनदास कर्मवंद गांधी : एक विपुल लेखक थे। उनकी हस्ताक्षर शैली सरल, सटीक, स्पष्ट और कृत्रिमता से रहित थी। उनके शुरुआती प्रकाशनों में से एक, 'हिंद स्वराज', 1909 में गुजराती में प्रकाशित, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए "बौद्धिक खाका" बन गया। बापू ने अपनी आत्मकथा, 'द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ', 'सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका' में अपने संघर्ष के बारे में, हिंद स्वराज या इंडियन होम रूल, एक राजनीतिक पैम्फलेट, और 'जॉन रस्किन की अनटू दिस लास्ट' की गुजराती में एक व्याख्या सहित कई किताबें भी लिखीं। 'राजनीतिक अर्थव्यवस्था की प्रारंभिक आलोचना' इस अंतिम निबंध को अर्थशास्त्र पर उनका कार्यक्रम माना जा सकता है। उन्होंने शाकाहार, आहार और स्वास्थ्य, धर्म, सामाजिक सुधार आदि पर भी विस्तार से लिखा। गांधी के संपूर्ण कार्यों को भारत सरकार ने 1960 के दशक में 'द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' के नाम से प्रकाशित किया।



धीरूबेन गोरघनभाई पटेल : एक भारतीय उपन्यासकार, नाटककार और अनुवादक हैं। धीरूबेन पटेल ने लघु कथाओं और कविताओं के साथ-साथ उपन्यासों के कई संग्रह भी लिखे हैं। उन्होंने रेडियो नाटक और मंचीय नाटक लिखे हैं। उनका काम गांधीवादी आदर्शों से प्रभावित है। उनका मानना है कि महिलाओं की हीन स्थिति का मूल कारण उनकी अपनी मानसिक स्थिति है। उनका प्रारंभिक कार्य, विशेष रूप से, महिलाओं के जीवन और उनके संबंधों से संबंधित है और जो खुद को "स्वार्थ की खोज" के रूप में वर्णित करती हैं।

साहित्य को एक परिवर्तन के दृष्टिकोण से भी देखा जाता है। वे सामाजिक, राजविद, धार्मिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक तौर पर भी समाज में प्रभाव डालता है।

प्रत्येक व्यक्ति में कहीं न कहीं कोई एक लेखक या कवि छुपा हुआ होता है, तो आप भी अधिक से अधिक पढ़ें और एक नए रचनाकार बनने का प्रयास भी करें.....!!

(स्रोत : इंटरनेट)

...

गुजराती लोक नाट्य भवाई

श्री अभिषेक पंड्या
वरिष्ठ लेखाकार



भारत अपनी विभिन्न सांस्कृतिक विशेषताओं को आज भी सहेजे हुए हैं। भारत की हर जगह प्राचीन समृद्ध लोक कलाओं द्वारा मनोरंजन के साथ-साथ समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया गया है। ऐसे ही पश्चिमी भारत की एक लोक कला के बारे में मुझे जानने का एक दिन अवसर मिला जो है 'भवाई'। 'भवाई' गुजराती भाषा के दो शब्दों 'भव' जिसका अर्थ है 'विश्व' तथा 'आई' जिसका अर्थ है 'माता', यानी विश्व की माता "जगदम्बा"। माता को केंद्र में रखकर नाट्य रचयन किया जाता है।

'भवाई' देखने का अवसर मुझे एक धार्मिक यात्रा के अवसर पर प्राप्त हुआ। गुजरात के बनासकांठा जिले में दुर्गा माता के 51 शक्तिपीठों में से एक अंबाजी मंदिर भक्तों में बहुत प्रसिद्ध है। नवरात्रि के समय अंबाजी माता के दर्शन करने जब मैं पहुँचा उसी रात्रि वहां एक नाट्य का आयोजन हुआ। इस लोकनाट्य की कथा, वेशभूषा और पात्रों के अभिनय ने मुझे मंत्र मुग्ध कर दिया। इस लोक कला की और झलकियां देखने से मैं खुद को रोक ना सका। भवाई नाट्य कला को जानने के कोतूहल ने मुझे इस कला को समझने के लिए प्रेरित किया और जो कुछ भी मैं जान सका उसे आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

'भवाई' की शुरुआत 14 वीं सदी में गुजरात के ही ग्रामीण इलाकों में रहने वाले समुदायो ने जनजागरण और लोक रंजन के उद्देश्य से इस शैली की परिकल्पना की और एक रचनात्मक आंदोलन के रूप में इसे स्थापित किया। 'भवाई' के प्रमुख सूत्रधार असाईत ठाकर को माना जाता है। भवाई के प्रवर्तन के पीछे भी एक रोचक कहानी है। असाईत उंडा गांव के पुरोहित थे, उन्होंने अपने गांव की एक पटेल पुत्री गंगा की शील रक्षा हेतु मुस्लिम राजा के दरबार में भवाई का आयोजन किया तथा गंगा को अपनी पुत्री बताया, राजा को जब असाईत की इस बात पर शक हुआ तो उसने असाईत को गंगा के साथ एक थाली में भोजन करने का आदेश दिया। इससे असाईत को उसके धर्म से भ्रष्ट होना बता कर उसे समाज से बाहर कर दिया गया क्योंकि गंगा पटेल थी इसलिए पटेल समाज ने असाईत को संरक्षण दिया।



असाईत ठाकर ने अंबामाता की उपासना में भवाई के 365 विभिन्न पात्र रचे, इन विभिन्न पात्रों की रचना, विभिन्न नाट्य पटकथाओं ने भवाई को समृद्ध कर दिया। इनकी मुख्य रचना "हंसाउली" के मुख्य पात्र वेश "रामदेव पीर के वेश" को सबसे पुराना पात्र वेश माना जाता है। रामदेव पीर एक लोक देवता है।

'भववाई' मुख्य रूप से तरगाला जाति का पेशा बना रहा परन्तु आज गुजरात में अनेक जातियों में भवाई खेलने की प्रथा है। भवाई सिर्फ पौराणिक कथाओं पर ही आधारित नहीं है इसमें सामाजिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक प्रसंग भी होते हैं। भवाई की शुरुआत माता या शक्ति की उपासना करने के बाद मंडली के सदस्यों द्वारा आदेश दिया जाता है "भले-भले, भाई-भाई, रमती करो रे भवाई"। भवाई मंडली में 9 से लेकर 20 पात्र होते हैं। इन प्रसंगों का कथानक सामाजिक कुरूपतियों पर भी अपने वाक्य चातुर्य से हँस-हँस कर प्रहार करता है। भवाई के पात्रों की वेशभूषा अनेक कालखंडों की विशेषताओं को सहेजे हुए हैं जिसमें प्रमुख स्त्री पात्रों की गुजराती ओढ़नी है। स्त्री पात्रों का अभिनय भी पुरुष ही करते हैं। प्रसंग को दर्शकों के लिए और मनोरंजक बनाने के लिए विभिन्न वाद्ययंत्र तबला, ढोल, झांझ, छोटी शहनाई के साथ बैजों का इस्तेमाल किया जाता है। गरबा के गीत और उसकी खास लय-ताल से भरा संगीत सौराष्ट्र की लोक-संस्कृति की महक बना देता है। शास्त्रीय संगीत के रागों और तालों के द्वारा वक्तव्यों की शुरुआत और अंत किया जाता है।

भववाई के अभिनय की कला सीखने के लिए देश के प्रतिष्ठित 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' से हर साल कई छात्र आते हैं। आज भी उत्तर गुजरात के कई गांवों में आश्विन मास की नवरात्रि के अवसर से 'भववाई' प्रदर्शन का प्रारंभ होता है। दीपावली के बाद भवाई मंडलियां अपने नियत तथा आमंत्रित गांवों में जाती हैं। खुले रंगमंच पर रात भर गीत, संगीत और नृत्य के साथ क्रम से नाटिकाओं, वेशों को प्रदर्शित करती हैं।



गुजरात के महान संत का जन्म शताब्दी महोत्सव

श्री एस. जे. पारेख
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



“दूसरों के सुख में, अपना सुख है, दूसरों के भले में, अपना भला है”

विश्वविख्यात विरल संतविभूति परम पूज्य 'प्रमुखस्वामी महाराज', जिन्होंने उक्त सूत्र को मूर्त रूप दिया और इस सूत्र के अनुसार जीवन व्यतीत किया, उनकी जन्म शताब्दी अहमदाबाद, गुजरात में बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ 600 एकड़ के प्रमुखस्वामी नगर में 15 दिसंबर, 2022 - 15 जनवरी, 2023 तक मनाई गई। हम अधिक गौरव महसूस कर सकते हैं, क्योंकि ऐसे विरल संतविभूति की कर्मभूमि तो पूरा विश्व थी, लेकिन उनकी जन्मभूमि थी - गुजरात।

एक अनूठा व्यक्तित्व जिसने 1200 से अधिक मंदिरों और 1000 से अधिक विद्वान संतों का उपहार देकर दुनिया को भारत की 10,000 साल पुरानी संस्कृति से परिचित कराया। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने 52 से अधिक देशों की यात्रा की, 17,000 से अधिक शहरों, गांवों और कस्बों का दौरा किया, भूमि को पवित्र किया, 7,60,000 से अधिक पत्र लिखे, लोगों की समस्याओं को हल किया - उनके भ्रम दूर किए, 8,10,000 से अधिक लोगों को मिलकर उनकी मदद की, उन्हें आशीर्वाद दिया।

देश या विदेश के किसी भी कोने में किसी भी प्राकृतिक आपदा के दौरान आवश्यक राहत सहायता की व्यवस्था करके समाज की जरूरतों को प्रमुखस्वामी महाराज ने तुरंत पूरा किया है। प्रमुखस्वामी महाराज की करुणा अपरंपार है। वह उम्र, लिंग, स्थिति, जाति या पंथ के बावजूद सभी तक पहुंच गए हैं। यहां तक कि रात के 2 बजे, नींद के बीच में उठकर भी उन्होंने प्रार्थना की है। लाखों लोगों को व्यसन से मुक्त कर सही और अच्छी दिशा में मोड़ा है। बच्चों, बूढ़ों और बड़ों सहित सभी भक्तों के लिए उनके निस्वार्थ प्रेम और स्नेह ने उनका दिल जीत लिया। इसलिए उन्हें हर तरफ से इतना प्यार मिल रहा है। वास्तव में कभी-कभी हमारे मन में एक स्वाभाविक प्रश्न आता है कि लोग बापा (प्रमुखस्वामी) से इतना प्यार, इतना स्नेह क्यों करते हैं? कारण केवल इतना है कि परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज ने सबके लिए इतना कुछ किया है जिसका कोई अंत नहीं है। यही कारण है कि लोग आज भी उनके प्रति इतना स्नेह दिखाते हैं। उनके बताए सिद्धांतों को वह अपने जीवन में उतार रहे हैं।

प्रमुखस्वामी महाराज एक एकांतिक सतपुरुष हैं, जो अक्षरब्रह्म का रूप हैं। किसी भी भाषा में हम इस पवित्र जीव की महानता की सराहना करते हुए पूरी तरह से परिभाषित नहीं कर सकते हैं। जैसे-जैसे हम उनके उत्कृष्ट गुणवत्ता के भावुक व्यक्तित्व को जानने की कोशिश करते हैं, हमें एहसास होता है कि हम अभी भी उन्हें पूरी तरह से जानने से कितने दूर हैं। ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व के भव्य दर्शन का आनंद लेने के लिए प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव एक अनूठा अवसर है।



यह पर्व केवल मनोरंजन और मस्ती का ही पर्व नहीं है बल्कि धर्म, ज्ञान (प्रेरणा), संस्कारिता का त्रिगुणात्मक संगम भी है। एक ऐसा महोत्सव जहाँ कदम रखते ही आपको कुछ अलग सा महसूस होता है, एक ऐसा महोत्सव जहाँ हर आने वाले को कोई न कोई प्रेरणा मिलती है, एक ऐसा महोत्सव जहाँ आपको भारत की हजारों साल पुरानी संस्कृति और पहचान की झलक मिलती है, एक ऐसा महोत्सव जहाँ भव्य और कलात्मक स्थापत्य विरासत के मूल्यों को समझा जाता है, एक ऐसा महोत्सव जहाँ हर आगंतुक, युवा और बूढ़े, लड़के और लड़की, किशोर और किशोरी को देखने, सीखने, जानने और आनंद लेने का मौका मिलता है।

जैसे ही कोई इस प्रमुखस्वामी नगर में प्रवेश करता है, एक बहुत ही भव्य और कलात्मक प्रवेश द्वार को देखकर अवाक रह जाता है। 380 फुट लंबा और 51 फुट ऊँचा नगर का मुख्य प्रवेश द्वार 'संत द्वार' जो आदि शंकराचार्यजी, तुलसीदासजी, स्वामी विवेकानंदजी, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर आदि महान विभूतियों की आदमकद 28 प्रतिमाओं से सुसज्जित था। थोड़ा चलने पर सामने प्रमुखस्वामी महाराज की विशाल 45 फीट बड़ी, निःस्वार्थ सेवा की प्रेरणा दे रही सुनहरी मूर्ति और उनकी परिक्रमा करते हुए उनकी 24 घंटे की परोपकारमय दिनचर्या की झलक मिलती है। फिर पीछे दोनों तरफ जगमगाता बगीचा रंग-बिरंगी रोशनी और तरह-तरह के विश्वस्तरीय आकर्षणों के माध्यम से स्वर्ग का अहसास करा रहा था। पूर्णकद के पशु, पक्षी, वृक्ष और आकर्षक प्रतीकों के द्वारा प्रमुखस्वामी महाराज के संदेश शास्त्रों में श्रद्धा, गुरु में श्रद्धा, राष्ट्रप्रेम, और विश्व बंधुत्व की प्रस्तुति करने वाला नयनरम्य और प्रभावक प्रमुखज्योति उद्यान विश्व का सबसे बड़ा विषयगत ज्योतिउद्यान था।

1200 से अधिक मंदिरों के अद्वितीय सर्जक प्रमुखस्वामी महाराज के विशिष्ट सर्जन दिल्ली में अक्षरधाम की 67 फीट ऊँची प्रतिकृति के द्वारा प्रमुखस्वामी महाराज के युगकार्य को अंजलि दी गई। हिंदू सनातन संस्कृति के भगवान श्री राधाकृष्ण, शिवपार्वती, सियाराम और भगवान स्वामीनारायण एवं गुणातीत गुरु परंपरा की मूर्ति के साथ-साथ गणपतिजी और अनेक देवी-देवताओं की मूर्ति अक्षरधाम की इस प्रतिकृति में प्रतिष्ठित की गई थी। अक्षरधाम के दर्शन परिक्रमा करके ऐसा अहसास होता था कि मानो तीर्थयात्रा कर ली हो। उल्लेखनीय है कि 2007 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा दिल्ली अक्षरधाम को **'World's largest comprehensive Hindu temple'** के रूप में घोषित किया गया था और प्रमुखस्वामी महाराज को विश्व में सबसे अधिक हिंदू मंदिरों के निर्माता के रूप में गिनीज बुक की ओर से **'मास्टर बिल्डर'** के सम्मान से विभूषित किया गया।

प्रमुखस्वामी नगर में प्रदर्शित प्रत्येक प्रदर्शनी हॉल से, जीवन को बेहतर बनाने के विचार, ललित नाटकों और वीडियो शो के माध्यम से प्राप्त हुए। इनमें **'संत परम हितकारी'** (जिसमें भक्तवत्सल प्रमुखस्वामी महाराज के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया गया था), **'टूटे घर-टूटे हृदय'** (जिसने परिवार की एकता को घरसभा से बनाए रखने के लिए प्रेरित किया), **'नारी शक्तिकरण'**, **'चलो तोड़ दे ये बंधन'** (व्यसन मुक्ति के लिए एक मार्गदर्शक लाजवाब शो), **'मेरा भारत हमारा भारत'** (हम भारत को फिर से महान कैसे बना सकते हैं) आदि प्रदर्शन खंड लाखों भाविकों के लिए विशेष आकर्षण के केंद्र थे।



तदुपरांत 4000 बाल स्वयंसेवक और स्वयंसेविकाओं के द्वारा संचालित बाल नगरी में बच्चों द्वारा तैयार किए गए उच्च जीवन शैली की प्रेरणा देने वाले तीन बाल प्रदर्शन खंड, 'जंगल ऑफ़ शेरू' (स्वविकास की प्रेरणा देने वाला प्रदर्शन), 'विलेज ऑफ़ बूजो' (माता-पिता के उपकारों का स्मरण कराने वाला प्रदर्शन), 'सी ऑफ़ सुवर्णा' (प्रार्थना + पुरुषार्थ = सफलता को दृढ़ कराने वाला प्रदर्शन) ने न केवल बच्चों बल्कि बड़ों को भी आकर्षित किया। व्यवस्थित अध्ययन, माता-पिता के प्रति आदर, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य, जैसे नियम ग्रहण करने वाले बालकों को गिफ्ट के द्वारा प्रोत्साहन भी दिया जाता था। इन प्रदर्शनों में सेवा कर रहे बालकों के शिक्षण का ध्यान रखते हुए, उनके अध्ययन के लिए शिक्षकों की व्यवस्था, आरोग्य की व्यवस्था, मनोरंजन के लिए विविध गेम्स का भी आयोजन किया गया था।

प्रबंधन की दृष्टि से भी यह महोत्सव अतुलनीय था। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी, माननीय गृहमंत्री श्री अमितभाई शाह और अनेक प्रतिष्ठित लोगों ने इस विश्व कक्षा के महोत्सव के प्रबंधन की बहुत प्रशंसा की। 80,000 संतों और स्वयंसेवकों की 77,00,000 मानव घंटे की निस्वार्थ: सेवा और समर्पण से निर्मित यह प्रमुखस्वामी नगर में प्रमुखस्वामी महाराज की दिव्य चेतना का निरंतर अनुभव हो रहा था। ऐसे अवसर पर प्रमुखस्वामी महाराज के पावन चरणों में एक शब्दांजलि...

प्रिय प्रमुखस्वामी,

आपकी जन्म शताब्दी के अवसर पर मैं चंद शब्दों में अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जो कुछ समय से मेरे हृदय में अंकित है। आप इस धरा पर दिव्यता की अभिव्यक्ति थे। हम कौन हैं और हम कहां से आए हैं इसकी परवाह किए बिना आपने हमें स्वीकारा, और आशीर्वाद दिया। आपने अपने लिए जीवन का एक भी पल जिए बिना, हमेशा दूसरों को पहले रखा है, हमेशा दूसरों के लिए जिया है। हर अच्छी और बुरी स्थिति में आप हमारे साथ रहे हैं और हमारा हाथ पकड़कर हमें अध्यात्म और नैतिकता के मार्ग पर ले गए हैं। वर्तमान समय में व्यसनों और कुरीतियों में बहुत से लोग फंसे हुए हैं, तब आपकी प्रेरणा और आपके द्वारा सुझाया गया मार्गदर्शन ही हमें जीवित रखता है। हमें अपनी जिम्मेदारियों से अवगत कराता है और मजबूत समर्थन प्रदान करता है।

आपने करुणा के सार्वभौमिक संदेश के माध्यम से सभी मानव जाति को प्रेम, शांति और सद्भाव की गहरी समझ प्रदान की है। आपने अपने जीवन के दशकों को इसके लिए समर्पित किया है और इसलिए आज लोग आपको गुरु के रूप में देखते हैं और प्रेरित होते हैं।

मैं आपके बारे में कितना भी लिखूं, वह हमेशा अधूरा ही रहेगा। क्योंकि आपने अनगिनत लोगों के लिए अनगिनत काम किए हैं, कल्पना से परे। आपके अनंत प्रेम के लिए हम सदैव आपके ऋणी ही रहेंगे। आज आपके द्वारा निर्मित अक्षरधाम जैसे 1200 से भी अधिक मंदिर सिर्फ एक मंदिर ही नहीं है बल्कि पूरे विश्व में प्रेम, शांति और सद्भाव का प्रतीक बन गए हैं। आज भी आपके धामगमन के बाद आपकी दिव्य चेतना सात समुद्रों के पार विश्व के विभिन्न देशों में फैल रही है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपकी दिव्यता और महिमा प्रत्येक जीवमात्र तक पहुंचे। आज हम गुरुहरि महंत स्वामी महाराज के रूप में आपके दिव्य रूप के दर्शन करने के लिए बहुत भाग्यशाली हैं।

सच में, न भूतों, न भविष्यति: इस उत्सव में 35 दिनों की सेवा के द्वारा भाग लेकर मुझे जीवनभर की दिव्य स्मृति प्राप्त हुई है। इस भव्य उत्सव को सफल बनाने के लिए, भारतीय संस्कृति को पूरी दुनिया में प्रदर्शित करने के लिए BAPS स्वामीनारायण संस्थान, संतों और हजारों भक्तों को शत-शत नमन।.....**जय स्वामीनारायण !!**



गुजरात की मिट्टी की खुशबू

सुश्री रंकी गुप्ता
सहायक लेखा अधिकारी



मैं राजस्थान राज्य के जिला दौसा से हूँ। मैंने वर्ष 2013-2014 में राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय(अजमेर), से भौतिक विज्ञान में एम. एस. सी. की है। एम. एस. सी. के दूसरे सेमेस्टर में मैंने इंटरनशिप के लिए विभिन्न जगहों पर आवेदन किया और प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान, गांधीनगर में मेरा इंटरनशिप के लिए चयन हुआ।

यह मेरा गुजरात की भूमि से प्रथम परिचय था, उस समय मैं नहीं जानती थी कि मेरा इस भूमि से भविष्य में कितना लंबा संबंध जुड़ने वाला था। गांधीनगर में रहकर मैंने पहली बार इतने करीब से जिस प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव किया उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल होगा क्योंकि यह वो अनुभव है जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। भरी गर्मी में चारों तरफ हरियाली, मोरों का आनंदपूर्ण नृत्य और ना जाने ऐसे कितने मनमोहक प्राकृतिक दृश्य जिनसे आँखें हटाने का मन ही नहीं होता था। लगभग 45 दिन की इंटरनशिप के बाद फिर राजस्थान रवाना हुई, उस वक्त लगा था शायद यह मेरा गुजरात का पहला और आखिरी सफर हो।

एम. एस. सी. करने के बाद मेरा लक्ष्य कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर केन्द्रीय सचिवालय सेवा, दिल्ली में सहायक अनुभाग अधिकारी बनना था। कर्मचारी चयन आयोग परीक्षा, 2016 में मेरा लेखाकार के पद पर चयन हुआ जिसमें मैंने राजस्थान के बाद गुजरात को वरीयता सूची में दूसरे स्थान पर रखा जिसका कारण निसंदेह मेरा यूनिवर्सिटी के समय किया गया गुजरात दौरा था। राजस्थान में शून्य वेकेंसी होने की वजह से मेरा चयन गुजरात, राजकोट में हुआ। इससे पहले मैंने शायद ही कभी राजकोट का नाम सुना हो इसलिए मन में अजीब सा डर भी था।

मैंने 18.04.2018 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट में कार्यभार ग्रहण किया था। गांधीनगर में गुजरात के प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन के बाद अब मेरे पास मौका था यहाँ की संस्कृति से रूबरू होने का। गुजराती लोग अत्यंत ही शांतिप्रिय व नेक दिल इंसान होते हैं और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने को सदैव तत्पर रहते हैं। उद्योग धंधा हो अथवा राजनीति हर क्षेत्र में इस प्रदेश के लोग आगे हैं।

गुजरात के अधिकांश लोग गुजराती भाषा बोलते हैं। परंतु यहाँ के बड़े लोग जिन्होंने शायद टीवी सीरियल के सिवा कहीं हिन्दी नहीं सुनी हो वो भी हमारे साथ टूटी-फूटी ही सही हिन्दी बोलने की हिम्मत कर ही लेते हैं, तब शायद उन्हें सुनकर हमारा गुजराती बोलने का साहस थोड़ा और मजबूत होता जाता है। यों तो गुजरात के लोग हर त्योहार को बहुत ही उमंग और उत्साह के साथ मनाते हैं। लेकिन विशेष रूप से नवरात्रि का त्योहार समस्त गुजरात में लोक नृत्य गरबा के रूप में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दौरान मुझे गुजराती संस्कृति को और नजदीक से देखने का मौका मिला।

गुजरात में जैन संस्कृति और विचारों का खासा प्रभाव रहा है, इस कारण गुजरात के अधिकांश लोग मुख्य रूप से शाकाहारी है। गुजरात के परंपरागत खाने में रोटी, भाकरी, कढ़ी, दाल, भात(चावल), सब्जी और छाछ होती हैं और पकवान में फाफड़ा, जलेबी, ढोकला, थेपला, खांडवी, पूरन-पोली, मालपुआ और श्रीखंड के नाम प्रसिद्ध हैं।

गुजराती लोग किसी बाहरी ब्रांड से पहले अमूल एवं बालाजी वेफ़र्स जैसे स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता देते हैं, जो उन्हें अलग एक पहचान देता है।

गुजरात में स्थित ऐतिहासिक मंदिर जैसे सोमनाथ का मंदिर, नागेश्वर ज्योतिर्लिंग, अक्षरधाम मंदिर, द्वारकाधीश का मंदिर यहाँ की संस्कृतिक धरोहर का बखान करते हैं। साबरमती आश्रम, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, रन ऑफ़ कच्छ, गिर राष्ट्रीय उद्यान, रानी की वाव आदि यहाँ की विरासत हैं।

नियुक्ति के समय मेरे मन में जो आशंका के बादल थे, वे अब छट चुके थे। इसी दौरान राजस्थान राज्य के अलवर जिले में मेरा विवाह हुआ और संयोगवश मेरे पति भी राजकोट में ही कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा परीक्षा-1) में कार्यरत हैं। अब मेरे लिए परिस्थितियाँ और सहज हो गई थी।

इस तरह यहाँ की संस्कृति एवं वातावरण से परिचित होने के बाद वर्ष 2019 में कर्मचारी चयन आयोग परीक्षा, 2017 में मेरा चयन केन्द्रीय सचिवालय सेवा, दिल्ली में सहायक अनुभाग अधिकारी पद पर हुआ जो मेरा लक्ष्य था, परंतु अब परिस्थितियाँ कुछ ओर थी। दिमाग और दिल का तालमेल बैठाना मुश्किल हो गया था। हालांकि मैंने त्याग पत्र देने के लिये आवेदन कर दिया था परंतु मन में बहुत सी शंकाएँ उठ रही थी। एक तरफ शांत, स्वच्छ, अपराधमुक्त, हरियाली और मौज मस्ती से भरपूर रंगीलो गुजरात और दूसरी तरफ प्रदूषण, भीड़भाड़, व्यस्तता, अपराधो से परिपूर्ण दिल्ली। त्याग पत्र मंजूर भी हो गया था और अब वह अंतिम दिन आ गया जब मुझे यहाँ से विदा लेनी थी, इसी उलझन के बीच मेरे पति ने मुझे फिर से मेरे निर्णय पर गौर करने को कहा अब तक शायद वह चुप थे क्योंकि मेरा ही सपना था केन्द्रीय सचिवालय जाने का। मेरे अंदर चल रही इस चिंगारी को बस थोड़ी हवा देने की जरूरत थी और वह काम मेरे पति ने कर दिया था। अब क्या था दफ्तर पहुचकर सबसे पहले अपना त्याग पत्र का आवेदन वापस लिया और इसी के परिणामस्वरूप आज मैं अपने पति और प्यारी सी बेटी (आध्या) के साथ यहाँ शांतिपूर्ण एवं खुशहाल जीवन जी रही हूँ।

अपने इस निर्णय पर आज भी मुझे आश्चर्य व प्रसन्नता दोनों का एहसास होता है। ज़िंदगी की भागदौड़ से दूर अपनी मस्ती में मस्त रहने वाले इन गुजराती लोगों से 'काई वान्धो नथी' अब हमने भी लगभग अपना ही लिया है। तो आइये, कुछ दिन गुजारिए गुजरात में और महसूस कीजिए यहाँ की मिट्टी की खुशबू को। मैं आश्वस्त करती हूँ कि यह खुशबू जीवनभर आपकी स्मृति में एक अविस्मरणीय एवं सुखद अनुभव के रूप में महकती रहेगी।

...

गुजरात की सुप्रसिद्ध महिलाएँ

सुश्री जीजा कुरूप
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



गुजरात की ऐसी महिलाएँ जिन्होंने अपने राज्य का ही नहीं वरन् अपने देश का नाम रोशन किया है। हम उन महिलाओं को सलाम करते हैं, जो अविश्वसनीय ऊंचाइयों पर पहुँच गई हैं और कड़ियों की प्रेरणास्त्रोत हैं! आइए जानते हैं इन्हीं में से कुछ एक को;

• विभिन्न क्षेत्रों में •

कस्तूरबा गांधी : इन्हें कौन नहीं जानता! कहा जाता है कि 'हर सफल आदमी के पीछे एक औरत का हाथ होता है'। कस्तूरबा हमेशा गांधीजी के साथ खड़ी रहीं, जब उनका विवाह हुआ तब वह सिर्फ 13 साल की थी। वह अनपढ़ थीं, लेकिन गांधीजी से पढ़ना-लिखना सीखा। उस समय भारत में महिलाओं की स्थिति को देखते हुए यह एक संभावित क्रांतिकारी कदम था। कस्तूरबा बहुत ही धार्मिक महिला थीं। उसने सभी जाति भेदों को त्याग दिया और आश्रमों में रहने लगी।



दीवालीबेन भील : गुजराती लोक संगीत की दिल और आत्मा, दीवालीबेन जूनागढ़ से ताल्लुक रखती हैं। वह 'जितु हमेशा गुजरात' - गुजरात के गान के लिए 25 सेलिब्रिटी गायकों में से एक होने के लिए जानी जाती हैं। एक स्व-शिक्षित कलाकार, दीवालीबेन ने पूरे देश और दुनिया भर में प्रदर्शन किया है। उन्होंने सैकड़ों गुजराती भजन, गरबा और लोक गीत गाए हैं। उन्होंने एक गायिका के रूप में गुजराती फिल्मों के लिए भी काम किया। दीवालीबेन को 1990 में प्रतिष्ठित पद्मश्री मिला है।



एलाबेन भट्ट : एलाबेन जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण के लिए सबसे उल्लेखनीय ताकतों में से एक हैं। उन्होंने अपना जीवन महिलाओं के विकास और भारत के गरीब और सबसे अधिक उत्पीड़ित लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए समर्पित कर दिया है। वे अपने देश की भावना और उसके प्रेरणास्त्रोत महात्मा गांधी के प्रति सच्ची रही हैं। उन्होंने जीवनभर उनके आदर्शों का पालन किया है। एलाबेन ने इस विचार को आगे बढ़ाया कि लोग स्वयं चाहे कितने भी गरीब या अशिक्षित क्यों न हों, अपनी समस्याओं को हल करने में सक्षम हैं यदि तो ऐसा करने के लिए एक साथ संगठित हों। इस विचार ने सेवा (स्व-नियोजित महिला संघ) के रूप में आकार लिया, जो दुनिया में महिलाओं के लिए सबसे अच्छे जमीनी कार्यक्रमों में से एक है। वह कई पुरस्कारों की गौरवान्वित विजेता हैं और कई संगठनों की प्रमुख हैं।



मल्लिका साराभाई : मल्लिका प्रसिद्ध विक्रम और मृणालिनी साराभाई की बेटी हैं। एक प्रसिद्ध कार्यकर्ता और प्रमुख कोरियोग्राफरों में से एक, मल्लिका की अहमदाबाद में स्थित 'दर्पण' नाम की अपनी नृत्य अकादमी है। वह एक कुशल कुचिपुड़ी और भरतनाट्यम



नृत्यांगना हैं और थिएटर, टेलीविजन, फिल्म, लेखन और प्रकाशन के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए जानी जाती हैं। 1989 में, उन्होंने अपनी सबसे कठिन एकल नाट्य कृतियों में से पहली, शक्ति: द पावर ऑफ वुमेन बनाई। उन्होंने अपने लंबे करियर के दौरान कई पुरस्कार जीते हैं, गोल्डन स्टार अवार्ड उनमें से एक है, जिसे उन्होंने सर्वश्रेष्ठ नृत्य एकल कलाकार, थिएटर डी चैंप्स एलिसीज़, पेरिस 1977 के लिए जीता था। उन्हें 25 देशों के 400 नर्तकियों में से चुना गया था। मल्लिका CIOFF (लोक नृत्यों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित संगठन) के लिए भारत की प्रतिनिधि हैं।



सरिता जोशी : एक प्रसिद्ध मंच कलाकार, सरिता जोशी को सुपर हिट पारिवारिक मनोरंजन 'बा बहू और बेबी' में 'बा' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपने अभिनय करियर की शुरुआत गुजराती थिएटर से की थी। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता मणिरत्नम द्वारा निर्देशित अभिषेक बच्चन स्टारर 'गुरु' में उनकी भूमिका के कारण सरिता को अंतराष्ट्रीय ख्याति मिली। वह फिल्म 'दस्विदनिया' में भी केंद्रीय किरदार थीं। सभी माध्यमों में से, वह रंगमंच और मंच प्रदर्शन के लिए एक विशेष कोना रखती हैं। उनका दावा है कि मंच पर प्रस्तुति देने का आनंद हमेशा किसी भी अन्य चीज से बेहतर होता है। 1988 में, उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। टीवी सोप में उनकी भूमिका के लिए उन्हें 2007 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के खिताब से भी नवाजा गया था।



फाल्गुनी पाठक : वड़ोदरा में जन्मी और पली-बढ़ी फाल्गुनी पाठक एक गायिका और प्रसिद्ध कलाकार हैं। उनका संगीत गुजरात के पारंपरिक संगीत रूपों पर आधारित है। पाठक गुजराती समुदाय में बहुत लोकप्रिय हैं और उन्हें "डांडिया क्वीन" कहा जाता है। जिन्होंने कई हिंदी एल्बम बनाएं हैं जो अति लोकप्रिय हुए हैं।



प्रियांशी सोमानी : सूरत में जन्मी प्रियांशी सोमानी को 'ह्यूमन कैलकुलेटर' के नाम से जाना जाता है। मानसिक गणना विश्व कप 2010 के सबसे कम उम्र के प्रतिभागी और विजेता, सोमानी 2012 में "मेटल स्क्वायर रूट्स" में नई "विश्व रिकॉर्ड धारक" बन गईं और उन्हें गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स 2014 के माइंड एंड मेमोरी पेज पर चित्रित किया गया।



तरला दलाल : तरला दलाल एक भारतीय फूड राइटर, शेफ, कुकबुक ऑथर और कुकिंग शो की होस्ट थीं। उनकी पहली कुक बुक, द प्लेज़र ऑफ़ वेजिटेरियन कुकिंग, 1974 में प्रकाशित हुई थी। तब से, उन्होंने 100 से अधिक पुस्तकें लिखीं जिनकी 10 मिलियन से अधिक प्रतियां बिकीं। हालाँकि उन्होंने कई व्यंजनों और पौष्टिक भोजन पकाने के बारे में लिखा, लेकिन उन्होंने भारतीय व्यंजनों में विशेष रूप से गुजराती व्यंजनों में विशेषज्ञता हासिल की। उन्हें 2007 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया था, जिसने उन्हें खाना पकाने के क्षेत्र से एकमात्र भारतीय बना दिया था, जैसे शीर्षक से सम्मानित किया गया था। 2005 में इंडियन मर्चेण्ट्स चैंबर द्वारा 'वुमन ऑफ द ईयर' से भी सम्मानित किया गया था।



आनंदीबेन पटेल : आनंदीबेन मफतभाई पटेल ने गुजरात की पहली महिला मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया है। वह एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं जो उत्तर प्रदेश के वर्तमान राज्यपाल के रूप में सेवारत हैं। उन्होंने मध्य प्रदेश के राज्यपाल और छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के रूप

में भी कार्य किया। मोहिनाबा बालिका विद्यालय की दो छात्राओं को नर्मदा के नवगाम जलाशय में डूबने से बचाने के लिए वीरता पुरस्कार। चारुमति योद्धा पुरस्कार (ज्योतिसंघ), अहमदाबाद के विजेता। अंबुभाई पुरानी व्यायाम विद्यालय पुरस्कार (राजपीपला) के विजेता। गुजरात में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के लिए राज्यपाल और राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित।

• खेल में •

टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए गुजरात से चुनी गई महिला एथलीट हैं:

1. माना पटेल (तैराकी), 2. अंकिता रैना (टेनिस) और
3. एलावेनिल वलारिवन (निशानेबाजी)।

• पैरालंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली तीन अन्य महिला खिलाड़ी •

1. पारुल परमार (बैडमिंटन), 2. भाविना पटेल और 3. सोनल पटेल (टेबल टेनिस)।

• गुजरात की महिला उद्यमी रोल मॉडल •

जसुबेन पिज्जा : जसुबेन पिज्जा ने गुजरात के बड़े बाजार पर कब्जा कर लिया है। गुजरात में एक शिक्षित व्यक्ति भी पिज्जा हट के ऊपर 'जसूबेन के पिज्जा' को तरजीह देगा। जसुबेन पिज्जा की शुरुआत इसी नाम के व्यक्ति ने अपने शुरुआती चालीसवें वर्ष में की थी। जबकि उन्होंने मूल रूप से अपने बच्चों के लिए पिज्जा बनाया था, जब आसपास के लोगों ने उनको सराहना करना शुरू किया तो यह विचार जड़ पकड़ गया। अपने 'गुजराती' स्वाद के लिए जाने जाने वाले शाकाहारी पिज्जा राज्य में काफी प्रसिद्ध हैं।



लिज्जत पापड़ : महिला उद्यमिता का एक और उदाहरण, 'लिज्जत पापड़'। 'लिज्जत पापड़' अशिक्षित महिलाओं के समूह की रचना है। यह उद्यमिता का मॉडल है। लिज्जत की वेबसाइट के मुताबिक, संस्था ने 1959 में काम शुरू किया था। 7 गांव की महिलाओं के एक अग्रणी बैच ने पापड़ के 4 पैकेट बनाकर बॉल रोलिंग शुरू की थी। कई मौकों पर सदस्यों के विश्वास और धैर्य की परीक्षा हुई - उनके पास पैसे नहीं थे और उन्होंने रुपये 80/- की उधार राशि से शुरुआत की। आज, महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़ एक महिला संगठन है जो पापड़, अप्पलम, मसाला, गेहूँ आटा, चपाती, सासा डिटरजेंट पाउडर, सासा डिटरजेंट केक (टिकिया), सासा तरल डिटरजेंट से विभिन्न उत्पादों का निर्माण करता है। पूरे भारत में एक भवन से 7 बहनों की प्रारंभिक संख्या से 43,000 से अधिक बहनों तक की सदस्यता का विस्तार हुआ है।



अमूल : महिलाओं की वजह से अमूल (AMUL- Anand Mik Union Limited) सफल माना जाता है। लोकप्रिय अमूल के डेयरी विकास मॉडल में भी महिलाओं का योगदान है। इस ब्रांड को जो वैश्विक प्रशंसा मिली है, वह आंशिक रूप से जमीनी स्तर पर काम करने के कारण है, जिसे महिलाओं ने इसे सफल बनाने के लिए कार्य किया है। डेयरी विकास का अमूल मॉडल एक त्रि-स्तरीय संरचना है, जिसमें ग्रामीण स्तर पर डेयरी सहकारी समितियां जिला स्तर पर एक दुग्ध संघ और राज्य स्तर पर सदस्य संघों के एक संघ के तहत संबद्ध हैं। यह मॉडल हजारों ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए जाना जाता है, जो अमूल को दूध बेचकर जमीनी स्तर पर लाभान्वित होती हैं। अमूल का दावा है कि इसका मॉडल महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता हासिल करने में मदद करता है। ... (स्रोत : इंटरनेट)



गुजरात की शान 'गिर गाय'

श्री राकेश कुमार
सहायक लेखा अधिकारी



वैदिक साहित्य भारतीय देशी गायों का गुणगान करते नहीं थकते तो वहीं देशी-विदेशी वैज्ञानिक भारतीय देशी गायों पर अनुसंधान करके नित्य उनके गुणों को प्रस्तुत करते रहते हैं। ऋग्वेद में गाय को माता की तरह पालन पोषण करने वाली होने के कारण विश्व की माता कहकर पुकारा गया है। यजुर्वेद के अनुसार गाय एक अतुलनीय प्राणी है यद्यपि महाभारत में गाय को अमृत कलश की उपाधि दी गयी है।

गिर गाय देशी गौवंश की एक प्रजाति है इसे सबसे पुरानी देशी गाय के रूप में माना जाता है। गिर गाय का मूल स्थान काठियावाड (गुजरात) के दक्षिण में गिर के जंगलों में माना जाता है और इसी फलस्वरूप इस प्रजाति का नामकरण गिर किया गया है। यह गौवंश मुख्यतः गुजरात के अमरेली, भावनगर, जूनागढ़ और राजकोट जिलों में पाया जाता है देशी गौवंश में गिर प्रजाति की पहचान न सिर्फ दूध की क्षमता के लिए बल्कि ऊष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों में अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए भी यह गाय जानी जाती है।

इस गाय के शरीर का रंग सफ़ेद, गहरा लाल, भूरा, काला तथा चितकबरा होता है। इसके कान लम्बे और लटकते तथा अंदर की तरफ मुड़े रहते हैं। इसकी सबसे अनूठी विशेषता इसका उत्तल भाल है जो तेज धूप से इसे बचाता है। इसके शरीर की त्वचा बहुत ही ढीली और लचीली होती है।

गिर गाय की मांग न केवल भारत में बल्कि भारत के बाहर अमेरिका, मैक्सिको तथा ब्राज़ील में भी है। आज ब्राज़ील गिर गाय के कारण ही डेरी उद्योग में अग्रणीय है। ब्राज़ील में गायों की नस्ल सुधारने के लिए गिर गाय का अहम् योगदान है। ब्राज़ील और भारत के बीच रिश्तों की बुनियाद पचास के दशक में पड़ी थी जब भावनगर के महाराजा ने ब्राज़ील के एक किसान सेल्सो गार्सिया सिद को कृष्णा नामक गिर नस्ल का नंदी भेंट के रूप में दिया था।

गिर गाय का दूध अमृत के सामान माना जाता है। आधुनिक अनुसन्धान और शोधों से यह प्रमाणित हो चुका है कि गिर गाय का दूध पीने से मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। दरअसल गिर गाय की पीठ पर एक कुम्भा होता है जिसमें पायी जाने वाली सूर्यकेतु नाडी के कारण दूध में एक विशेष पीलापन होता है जो बहुत लाभदायक माना जाता है। गिर गाय का दूध A2 तरह का होता है तथा इसमें सभी तरह के लाभदायक तत्व पाए जाते हैं। यह दूध सभी बीमारियों से लड़ने में तथा बच्चों के मानसिक विकास में बहुत फायदेमंद माना जाता है। गौमूत्र का प्रयोग उर्वरकों तथा जैविक खेती में होने के साथ-साथ आयुर्वेद के अनुसार विभिन्न प्रकार के अर्घ बनाने हेतु किया जाता है जोकि असाध्य रोगों में भी प्रभावकारी होते हैं।

प्राकृतिक खेती के जनक और पद्मश्री पुरस्कार से पुरस्कृत डॉक्टर सुभाष पालेकर के अनुसार गाय के गोबर में पाए जाने वाले जीवाणु खेती के दौरान जमीन की उर्वरक शक्ति को बढ़ा देते हैं।

अंततः यह कहना उचित ही होगा की भारतीय नस्ल और विशेषतः गुजरात में पाई जाने वाली गिर गाय का पंचगव्य भारतीय सामासिक संस्कृति को अक्षुण्न बनाये रखने अत्यंत सहायक है।



गुजरात के मेले व त्योहार

श्रीमती राजश्री के. शाह
पर्यवेक्षक



भारत देश त्योहारों का देश है। अनेकता में एकता का पर्याय यानि भारतीय परंपरागत त्योहार। भारत में राष्ट्रीय, पारंपरिक एवं धार्मिक जैसे तीन तरह के पर्व मनाए जाते हैं। विश्व की तुलना में भारत देश के लोग धार्मिक पर्व को पूरे उत्साह से मनाते हैं। भारत में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और गांधी जयंती जैसे राष्ट्रीय त्योहारों एवं लोहड़ी, होली, ईद, बुद्ध पूर्णिमा, क्रिसमस आदि जैसे अनेक त्योहार बड़े हर्षोल्लास से मनाये जाते हैं। कई राज्यों में वसंतपंचमी, बिहु, छठ, पोंगल जैसे मौसमी त्योहार भी मनाए जाते हैं।

हमारा राज्य गुजरात, उसकी तो बात ही निराली है। वैसे तो कहा जाता है कि गुजराती का हर दिन त्योहार की तरह होता है या फिर जहां-जहां गुजराती वहां-वहां गुजरात और वहां-वहां खुशी, उमंग और उल्लास। गुजराती हर पर्व को बड़े उत्साह से मनाते हैं। राष्ट्रीय त्योहार हो या मौसमी या धार्मिक हर धर्म के त्योहार सभी मिल-जुलकर मनाते हैं।

गुजरात रंग-बिरंगे मेलों और त्योहारों के लिए देश-विदेश में मशहूर है। यहां होली, दिवाली, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी जैसे तकरीबन 35-40 त्योहार मनाए जाते हैं। गुजरात के अलग-अलग शहरों में हर पर्व की अलग-अलग महत्ता है।

गुजरात के त्योहारों की बात कुछ इस प्रकार करेंगे :-

1. रण उत्सव :- कच्छ में जनवरी के महीने में रणोत्सव मनाया जाता है। जो पहले तीन दिन का उत्सव था, अब लगभग एक महीने तक चलता है। यह उत्सव रेगिस्तान में शुक्लपक्ष में आयोजित किया जाता है, ताकि चांदनी रात में पूरा रण जैसे सफेद चादर ओढा हुआ हो, ऐसा प्रतीत होता है। सुबह सूर्योदय के समय यही सफेद रंग सुनहरी रूप धर लेता है। लोक-संस्कृति को उजागर करता हुआ यह त्योहार मनाने के लिए देश से और बड़ी मात्रा में विदेश से पर्यटक आते हैं। रण में रहने के लिए तंबु (टेंट) लगाए जाते हैं। कभी-कभी इतनी भीड़ हो जाती है कि बुकिंग भी नहीं मिलती। उत्सव में गरबा जैसे लोकनृत्य और संगीत प्रदर्शन होते हैं। स्थानीय लोग बाजारों में कच्छ हस्तकला के स्टॉल लगाते हैं, उसमें कच्छ भरतकाम की शाल, साडियां, सलवार-कमीज, चादरें, थैले आदि चीजें मिलती हैं। कच्छ की छुरी, सुडी और गृह सजावट की चीजें प्रख्यात हैं। पर्यटकों के लिए कच्छ के व्यंजनों की दुकानें भी लगती हैं वहाँ लोग अलग-अलग पकवानों का लुप्त उठाते हैं।

2. पतंगोत्सव :- 14 जनवरी को यह उत्सव मनाया जाता है। जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है इसलिए यह त्योहार मकरसंक्रांति के नाम से जाना जाता है। उस दिन गुजरात के प्रमुख शहर राजकोट, वड़ोदरा, अहमदाबाद और सूरत में तो लोग इस उत्सव के पीछे लगभग पागल हैं। सभी पतंगों में फीता बांध दिया जाता है। लोग सुबह 7 बजे से छत पर चढ़ जाते हैं। पतंग के शौकीन पतंग चढ़ाते हैं, पेच लड़ाते हैं, दूसरों की पतंग लूटते भी हैं। मूंगफली बर्फी, गन्ना, जैसी चीजें खाकर आनंद लेते हैं। छत पर म्युजिक





सिस्टम ले जाकर जोर से बजाते हैं और शाम को गरबा तथा वेस्टर्न डांस भी करते हैं। पूरे दिन पतंग उड़ाने के बाद शाम को फानुस चढ़ाते हैं और टिमटिमाते फानुस से पूरा आसमान भर जाता है। वह नजारा देखने लायक होता है। अहमदाबाद और सूरत में दो दिन पतंग उड़ाते हैं। दूसरा दिन 'वासी उत्तरायण' के नाम से जाना जाता है।

हर साल गुजरात सरकार की तरफ से अलग-अलग शहरों में अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव भी आयोजित किया जाता है जिसमें देश-विदेश से पर्यटक प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए आते हैं। लोग यह उत्सव देखने जाते हैं और भांति-भांति के रंगबिरंगी पतंगें देखने का मजा लेते हैं।

3. मोढ़ेरा डांस फेस्टिवल :- गुजरात के मोढ़ेरा शहर के सूर्य मंदिर के प्रांगण में इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। तीन दिवसीय उत्सव में भारतभर से नाट्य कुचिपुडी और कथक नृत्य पेश करने के लिए कलाकार आते हैं।

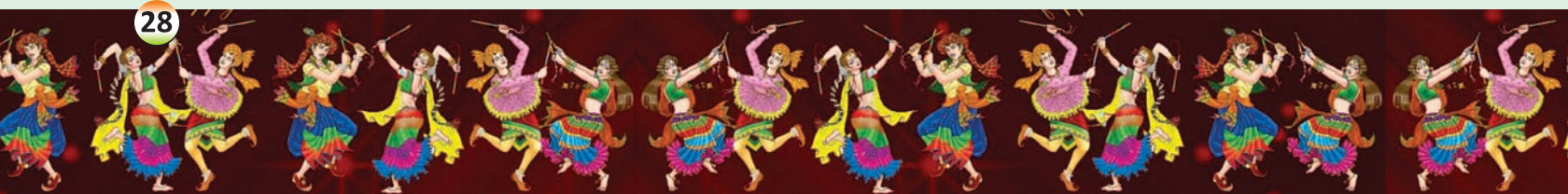
4. वसंतोत्सव :- यह मौसमी त्योहार है। इस बार फरवरी 2022 के महीने में गुजरात के गांधीनगर में WZCC, उदयपुर और यूथ सेवा एवं गुजरात सरकार द्वारा वसंतोत्सव भी आयोजित किया गया। उसमें अलग-अलग राज्यों की कलावस्तु के हाट लगे थे और 227 कलाकारों के द्वारा नृत्य शैली का भी प्रदर्शन किया गया था।

5. जन्माष्टमी उत्सव :- वैसे तो जन्माष्टमी का त्योहार पूरा भारत देश मनाता है लेकिन गुजरात का द्वारिका मंदिर कृष्ण जन्मोत्सव के लिए मशहूर है। रात को 12 बजे कृष्ण के जन्म का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, मंदिर भक्तों से खचाखच भरा होता है जिसका टी.वी. में लाइव प्रसारण भी दिखाया जाता है।

6. नवरात्रि :- नवरात्रि वैसे तो पूरे देश में मनाई जाती है। मगर गुजरात में ज्यादा धूमधाम होती है और गरबा यानी गुजराती और गुजराती यानी गरबा दोनों एक दूसरे के पर्याय होते हैं। नवरात्रि त्योहार नौ दिनों के लिए मनाया जाता है, जिसमें दुर्गा माँ के नव रूप की पूजा होती है। लोग नौ दिन का उपवास रखते हैं, घर पर माताजी की स्थापना करते हैं सुबह-शाम माँ की स्तुति और आरती करते हैं। रोज नवीनतम प्रसाद चढ़ाते हैं और दसवें दिन प्रसाद के साथ गरबे (कलश) का विसर्जन करते हैं और उपवास खोलते हैं।

हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी भी माँ के परम भक्त हैं। वे चाहें भारत में हों या विदेश प्रवास में, वे नौ दिन का उपवास कर आराधना करते ही हैं। यह बात विदेश में भी प्रचलित है। वे कहीं भी जाते हैं उनके लिए विशेष व्यवस्था उपवास के हिसाब से की जाती है।

गुजरात में राजकोट, अहमदाबाद, वड़ोदरा और सूरत की नवरात्रि बहुत ही मशहूर है। बड़े-बड़े पंडाल बनाकर सजाते हैं, उसमें दुर्गा माँ की मूर्ति को स्थापित करके, पूजा-अर्चना करते हैं। माँ के ईर्द-गिर्द प्राचीन एवं अर्वाचीन गरबा (लोक नृत्य) खेलते हैं। प्राचीन गरबा में डांडिया, टिप्पणी, दीया और गरबा रास होता है। कई जगह नृत्य और अन्य सांस्कृतिक नाटकों का आयोजन भी होता है। नौ दिन गरबा खेलने के बाद दसवें दिन बालाओं को खूब सारे पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है। अर्वाचीन रास में महिलाएँ एवं पुरुष भी गरबा खेलते हैं। अर्वाचीन रास में प्रतियोगिता होती है पंडालों में लगी मूर्तियों को दसवे दिन गाने-बाजे के साथ नदी में विसर्जित कर दिया जाता है। दसवें दिन भगवान राम की जीत को याद करके रावण दहन का कार्यक्रम भी होता है जो दशहरे के नाम से मनाया जाता है।



गुजरात के मेलों की तो बात ही निराली है। मेले छोटे-बड़े सभी को आकर्षित करते हैं। तीन जगहों के मेले सुप्रसिद्ध हैं -

1) शामलाजी मेला : गुजरात में कार्तिक पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर पवित्र मेशव नदी के तट पर मेला लगता है। तीन सप्ताह तक चलने वाले इस मेले में हजारों की संख्या में देश-विदेश से श्रद्धालु आते हैं और पवित्र जल में स्नान करके शिवजी का आशीर्वाद लेते हैं। यह मंदिर गुजरात तथा राजस्थान के बीच है तो एक तरह से दो संस्कृतिओ का मिलन स्थल भी कहलाता है। इस मेले में दोनों राज्यों की खास चीजें जैसे कपड़ा, आभूषण, धातु के बर्तन आदि का व्यापार करके लोग कमाई भी कर लेते हैं।

2) भवनाथ महादेव मेला : जूनागढ़ में स्थित गिरनार पर्वत की परिक्रमा करके धन्य होने के बाद यात्री मेले का लुप्त उठाते हैं। महा शिवरात्री से पाँच दिनों तक चलने वाले मेले से पहले हाथियों पर सवार होकर ऋषिमुनि जुलूस निकालते हैं और मंदिर तक पहुँच के शिवजी की पूजा-अर्चना करते हैं।

3) भद्र पूर्णिमा का मेला : यह मेला भाद्रपदी पूर्णिमा के दिन गुजरात के प्रख्यात अंबाजी मंदिर के बाहर लगता है। देश-विदेश से माँ के भक्त आते हैं। पूरे देश से चलकर आने वाले भक्तों की संख्या भी भारी मात्रा में होती है। पूरे दिन श्लोकों और स्तुतियों से मंदिर गूँजता रहता है। रात को गरबा के रूप में माँ की भक्ति होती है।

4) जन्माष्टमी मेला : गुजरात का सबसे मशहूर रॉयल मेला राजकोट शहर में लगता है। एक भी ऐसा राजकोट वासी नहीं मिलेगा जो मेले के पीछे पागल न हो। राजकोट का मेला पाँच दिन का छठ से लेकर दशम तक का होता है। मेले में 300 से ज्यादा जायंट व्हील, बेबी ट्रेन जैसी कई राइडस् होती हैं। जादू का खेल, मौत का कुँआ आदि की मौज अलग। रॉयल मेले में खाने के 150 और खिलौने, कपड़े और घर सुशोभित करने तथा किचन की वस्तुओं के स्टॉल भी लगते हैं। इस मेले में हर रोज लगभग एक लाख से ज्यादा लोग होते हैं। गुजरात के लोग मेले में किए हुए मजे से पूरे साल के लिए शरीर में जोश भर लेते हैं। एक बार जो राजकोट के मेले में आता है वह कभी नहीं भूल पाता है। **इस तरह गुजरात मेलों का राज्य है ऐसा कहना गलत नहीं होगा।**

इनके अलावा रक्षाबंधन, दिवाली, महावीर जयंती, ईद, बुद्ध पूर्णिमा एवं क्रिसमस जैसे त्योहारों को गुजराती लोग बिना किसी जात-पात और भेदभाव को मनाते हैं। अतः गुजरात के लोग रंगीन हैं और हर त्योहार को मस्ती से मनाते हैं। त्योहार रंगीन और गुजराती की जिंदगी खुशहाल !!

...



सुश्री कोकिला डी. पाठक

परामर्शदाता



मन को शांती की ओर ले जाता

गुजरात का वासद आश्रम

रोज-ब-रोज की आम जिंदगी में हम कितनी बार मन शब्द का जिक्र करते हैं। जैसे आज मेरा मन नहीं लग रहा है....., इस चीज़ को खाने का मन कर रहा है....., यह काम करने में मन नहीं लग रहा है.....आदि.....। पर इस मन को हम सही में जानते हैं क्या? कुछ करने में या नहीं करने में जो बार-बार आड़े आता है वह मन ही तो है। तो दोस्तों आज मैं मन के स्वभाव के बारे में और मन के ऊपर प्रभाव लाना गुजरात के आश्रम पर यह लेख लिखकर आपके साथ मेरे विचारों का विमर्श करना चाहती हूँ।

योग शास्त्र ने अपने अस्तित्व को सात स्तरों में बाँटा है। शरीर, मन, श्वास, चित्त, बुद्धि, अहंकार और आत्मा। जैसे यह सात कमरों वाली एक बड़ी इमारत। शरीर स्थूल भाग है, जिसे हम छू सकते हैं, देख सकते हैं जैसे गोरा-काला, मोटा-पतला आदि भेद कर सकते हैं। बाकी के सारे स्तर भीतरी और सूक्ष्म हैं। श्वास से जीवन-ऊर्जा मिलती है, चित्त से स्मृति बनती है, बुद्धि निर्णय में उपयोगी होती है, अहंकार से मान-अभिमान बनता है, आत्मा जो सच्चिदानंद स्वरूप है और मन?

चाहे मन को थोड़ा समझना है तो उसके स्वभाव या लक्षण को समझना पड़ेगा। सतत चंचल होना उसका स्वभाव है। कोई विचार पर टिकता नहीं, कभी भूतकाल में घटी घटनाओं पर सोचता है तो कभी भविष्य के बारे में दौड़ लगाता है। इसी स्वभाव के कारण उसे 'बंदर जैसा' कहते हैं। दूसरा मन का लक्षण है-नकारात्मकता को पकड़ना। दस अच्छी घटनाएं घटी हो पर यदि एक कुछ बुरी घटी हो तो मन दस अच्छी घटनाएं छोड़कर वह एक बुरी घटना के साथ ही उलझा रहता है। मन के ऐसे स्वभाव का प्रभाव धीरे-धीरे शरीर पर होता है और शरीर डायबीटीस, बी.पी., सरदर्द जैसी बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है। आज विश्व आरोग्य संस्था का भी कहना है कि 90% से ज्यादा रोग मानसिक स्तर पर है जिसके कोई किटाणु नहीं होते। मन के स्वभाव के कारण ही तनाव का जन्म होता है और तनाव पनपते भी हैं। छोटी आयु से लेकर बड़े-बुजुर्गों तक हर एक के जीवन में तनाव के दर्शन होते हैं। 'तनाव'- जैसे जीवन का पर्याय बन चुका है।

अब, ऐसे ही तनाव से छुटकारा पाने का एक ही रास्ता है- योग। योग यानी जोड़, योग यानी अनुसंधान, योग यानी मिल जाना, एक हो जाना। जब अस्तित्व के सारे स्तरों, शरीर, मन और श्वास का एकरूप होकर अनुसंधान होता है तो शरीर स्वस्थ, मन शांत, श्वास लय बद्ध और जीवन तनाव रहित बनता है। योग साधने पर, जीवन में घटती भली-बुरी घटनाओं के प्रति हम सांझीभाव रखते हुए शांत रह सकते हैं।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि योग के अष्टांग हैं जिसे अच्छी तरह से सीखना होता है और अपने जीवन का हिस्सा बनाना होता है।





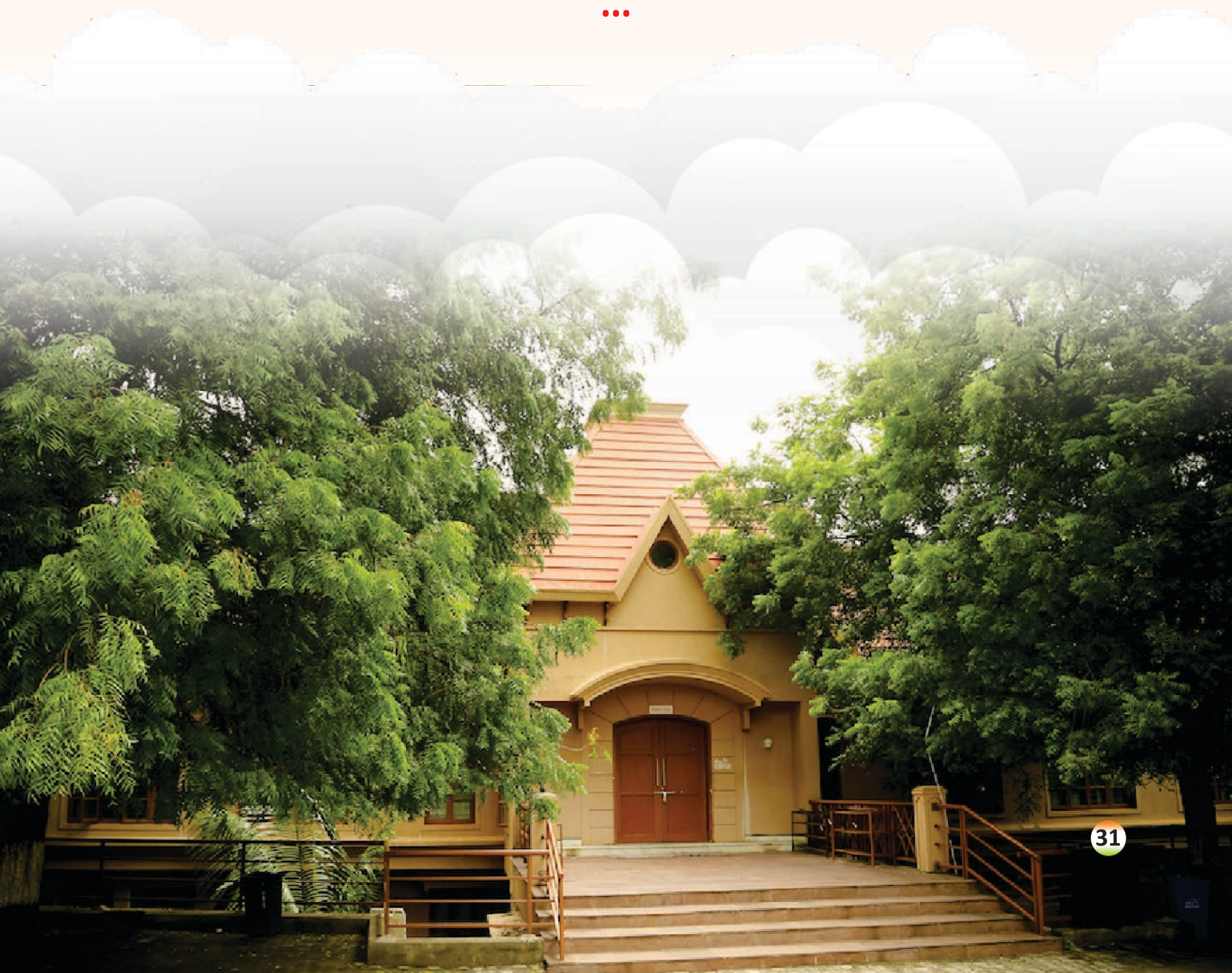
गुजरात के एक छोटे से गाँव- 'वासद' स्थित आर्ट ऑफ लिविंग का गुजरात आश्रम है जो महिसागर नदी के किनारे पर बनाया गया है। जो भी इंसान यहाँ आता है वह यहाँ रहकर योग सीख सकता है। इस आश्रम की विशेषताएँ बताएं तो यहाँ गिर-गायों की बड़ी गौशाला है। गाय का दूध और आश्रम में ही बना घी आए हुए लोगों के लिए बनती हुई रसोई में इस्तेमाल होता है।

एक यज्ञशाला है। भारतीय परंपरा अनुसार यहां त्योहारों पर बड़े यज्ञ का आयोजन किया जाता है। आयुर्वेद चिकित्सा पर आधारित चिकित्सालय भी चलता है और शरीर को 'पंचकर्म क्रिया' द्वारा शुद्ध किया जाता है।

हर उम्र के लिए निरंतर शिविर चलता रहता है जिसमें कई प्रकार के आसन, प्राणायाम, ध्यान और मौन की गहन शक्ति का अनुभव करवाते हैं। आश्रम का रसोई घर बिलकुल महिसागर नदी के किनारे पर स्थित है। आश्रम में आने वाले हर एक आदमी को स्वास्थ्यप्रद भोजन और खाते-खाते प्रकृति देखने का भी आस्वाद मिलता है।

तीस एकड़ में फैला वासद आश्रम बाग-बगीचों, अलग-अलग प्रकार के फूल, पेड़, पौधे, विभिन्न पक्षियों से भरपूर है। यदि कोई साल में 10-15 दिन प्रकृति की गोद में रहे और आसन- ध्यान – प्राणायाम- मौन – साधना ग्रहण करे तो निश्चित ही एक नई ऊर्जा जीवन में नई दृष्टि से भर लेगा !

...



गर्व है “गुजरात” पर

सुश्री चारु धारिया

परामर्शदाता



स्वतंत्र हुए 75 साल होने पर ये साल “अमृत महोत्सव” पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। हमारी “गिरनार” पत्रिका में हर साल की तरह कुछ लिखने का मौका मिलता है, तो इस साल “गुजरात” के बारे में अपने विचार लिखने हैं ऐसा विषय दिया गया है। तो दोस्तों...आज मुझे जो सौभाग्य मिला है कि मैं मेरे विचार, अनुभव यहाँ साझा करूँ। भारत के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित बहुत ही महत्वपूर्ण राज्य “गुजरात” के बारे में थोड़ी बातें आप लोगों को बताना चाहती हूँ।

हम बात करेंगे “श्री महात्मा गांधी जी” से लेकर वर्तमान समय के “श्री नरेंद्र मोदी जी” जैसे महानुभावों की। ...ऐसे महान लोगों को हम कैसे भूल सकेंगे? गुजरात का पुराना नाम गुर्जस्त्र/गुर्जर भूमि था। महाराष्ट्र और गुजरात का विभाजन 01-05-1960 में हुआ, जो सभी लोग जानते हैं, गुजरात के पिता “श्री रविशंकर महाराज” थे। ये तो हुई औपचारिक बातें,

हमारे “राष्ट्रपिता” श्री मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म पोरबंदर जैसे छोटे से शहर में हुआ था, लेकिन हिंदुस्तान की आज़ादी के लिए कहाँ से कहाँ पहुँच गए....दांडी यात्रा की, सत्याग्रह किया...वो भी गुजरात में...पोरबंदर में गांधी जी का जन्म स्थल, अहमदाबाद में साबरमती आश्रम...“गांधीजी” ने देश के लिए क्या-क्या किया, उन सभी की जानकारी यहाँ से मिलती है।

दूसरे हमारे 'लौह पुरुष' श्री वल्लभभाई पटेल...वो भी स्वतंत्रता सैनानी, जिन्हें बाद में “सरदार” जैसा उपनाम दिया गया, जिनकी भी दुनिया में सबसे ऊँची प्रतिमा बनाई गई, और जो भारत की राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं। जो गुजरात में सरदार सरोवर बाँध के सामने एक द्वीप पर स्थित है, और ये बहुत ही कम समय में राष्ट्र का गौरव बन गया। दुनियाभर से कई पर्यटकों को आकर्षित कर रही है ऐसी 'गुजरात' की प्रतिमा...श्री वल्लभभाई पटेल ने भारत में एकता बनाए रखने में बड़ा योगदान दिया था। वे एकता, शांति, शक्ति के प्रतीक हैं। आप जरा सोचिए जो पर्यटक पहले अमेरिका देश जाते थे तो वहाँ न्यूयॉर्क में स्थित “स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी” देखने जाते थे, और वहाँ से देश वापिस आते थे तो दूसरे लोग पूछते भी थे क्या आपने “स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी” देखा? कितना उत्साह था! लेकिन...आज...भारत से जो पर्यटक विदेश जाते हैं तो पूछते हैं कि क्या आपने “स्टेच्यू ऑफ यूनिटी” की प्रतिमा देखी? कितना उल्टा ही हो गया! कितना गर्व महसूस होता है जब हम हमारे ऐसे “गुजरात” के बारे में सुनते....

इसके बाद मैं “मनीबेन पटेल” की बात करूंगी। आपने पहचाना? वो थी हमारे लौह पुरुष की बहुत ही हिम्मतवाली बेटी...“भारत छोड़ो” आंदोलन में उनका भी योगदान था...आप सोचिए कि अंग्रेज़ों के जमाने में जब हमारा देश आज जैसा स्वतंत्र नहीं था, उस जमाने में एक लड़की होकर भी इस “गुजरातन” ने कितनी हिम्मत दिखाई होगी!

उसके बाद थोड़ा आगे चलते हैं...“श्री विक्रम साराभाई...सभी ने ये नाम सुना ही होगा। “INDIAN SPACE PROJECT FOUNDATION OF INDIAN SPACE RESEARCH ORGANIZATION (ISRO)” ...जो अहमदाबाद में है। सोचिए वे Physicist and astronomer



रहे और Nuclear power develop किया, उन्हें "Father of Indian Space Program माना जाता "उस जमाने में रॉकेट की दुनिया में पहुँच गए जब रॉकेट क्या चीज़ है वो भी बहुत ही कम लोग जानते थे। आविष्कार की एक नई ही दुनिया....कितनी अच्छी शोध की। पूरी दुनिया में मशहूर हो गए। उनको "पद्म भूषण" और "पद्म विभूषण" पुरस्कार मिला था। श्रीमती मृणालिनी, उनकी धर्म पत्नी...जो एक बहुत ही अच्छी भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना थी। जिन्होंने नृत्य, ड्रामा, संगीत के लिए 1949 में अहमदाबाद में "दर्पण अकादमी" की स्थापना की, 1977 से उनकी बेटी मल्लिका साराभाई बहुत ही अच्छी तरह संभाल रही है। उद्देश्य एक ही है कि भारतीय संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए।

अभी हम कला की ही बात कर रहे हैं तो पहले संगीत की भी बात करें! गुजरात के प्रसिद्ध कलाकारों की बात....आप सब ने "ताना-रीरी" बहनों का नाम तो सुना ही होगा और उनकी कहानी भी पता होगी। वो भी आज दोहारने का मन कर रहा है। सभी जानते ही हैं कि अकबर बादशाह के दरबार में नौ रत्न थे जोकि बहुत मशहूर थे। तो एक बार महान संगीतकार श्री तानसेन जी को अकबर बादशाह ने उनके पास 'दीपक' राग गवाया, बादशाह को बताया भी गया था कि 'दीपक' राग गाने के बाद उनके शरीर में दाह उत्पन्न हो सकती है और 'दीपक' राग की दाह बुझाने के लिए कोई गायक 'मल्हार' राग अच्छी तरह गा सकेगा तो ही दाह बुझ सकती है, लेकिन बादशाह माने ही नहीं और तानसेन जी के तन में दाह उत्पन्न हो गई। तानसेन जी अब मल्हार राग गानेवाले की तलाश में निकले .. दिल्ली से वो घूमते-घूमते गुजरात के 'वड्नगर' पहुंचे। वहाँ एक जगह बैठे ही थे कि उन्होंने दो बहनों की बातें सुनी, कि एक बहन कुएं में से पानी निकाल रही थी तो दूसरी को बता रही थी कि...सुनो-सुनो...पानी निकालते समय 'मल्हार' राग की आवाज़ आ रही है.... तानसेन जी की समझ में आ गया कि यही दो बहनें हैं जो ये दाह बुझा सकती हैं। तानसेन जी ने उन दोनों को पूरी कहानी बताई और विनंती की कि 'मल्हार' राग गाए....दोनों बहनों ने भी शर्त रखी की ये बात किसी को पता नहीं चलनी चाहिए। तानसेन जी मान गए और दोनों ने 'मल्हार' राग गाया और ज़ोर से बारिश होने पर तानसेन जी की दाह बुझ गई। तानसेन जी वापिस दिल्ली चले गए, बादशाह ने पूछा कि ये सब कैसे हुआ ? तानसेन जी को पूरी कहानी बतानी पड़ी। बादशाह तो खुश हो गए और सिपाहियों को "ताना-रीरी" को मान-सम्मान के साथ दरबार में लाने वड्नगर भेजा, लेकिन "ताना-रीरी" को मंजूर ना होने पर दोनों ने आत्मविलोपन कर लिया। तब से संगीत में घराना होता है, और हर एक घराने में 'तराना' होता है, तो उसमें 'तोम....तनन...ताना...रीरी...' जैसे शब्दों का उपयोग होने लगा....कितनी महान थीं दो बहनें...हमारे "गुजरात" की....

आज के संगीतकार "श्री कल्याणजी-आनंदजी" शाह, एक गुजराती परिवार से...कच्छ में जन्मे हुए दोनों भाई हैं। व्यापार के लिए कच्छ से मुंबई गए, लेकिन वहाँ हिंदी फिल्मों में संगीत देना शुरू किया। कई नए बच्चों को संगीत की शिक्षा देकर गायक बनाया...जैसे...साधना सरगम, अल्का याज्ञिक, उदित नारायण, सुनिधि चौहान...आदि...आज के बहुत ही अच्छे गायकों, कलाकारों की ये गुजराती संगीतकारों की वजह से एक पहचान बन गई।

इन सभी बातों में हम "गुजरात" के लोक नृत्य को कैसे भूलें? पूरी दुनिया में बहुत ही प्रचलित 'रास - गरबा' सब लोगों की पसंद....ऐसा नृत्य, जो नवरात्रि का त्योहार, ये एक ही ऐसा त्योहार है जो नौ दिन चलता है, सब लोग 'रास - गरबा' खेलते ही हैं, परंतु अब तो गुजराती शादी में भी एक दिन का फंक्शन सा बन गया है। ऐसा है 'गुजरात' का लोक नृत्य....



अब त्योहार की ही बात हो रही है तो 'जन्माष्टमी' का मेला...श्री कृष्ण भगवान का जन्म दिन मनाने के लिए मंदिर में तो पूजा होती है, लेकिन चार दिन का मेला भी गुजरात के कई-कई शहरों में लगता है जिसे लोग खुशी-खुशी मनाते हैं...

कलाकारों में लेखक-लेखिका, कवि...का भी योगदान हम कैसे भूलें? "श्री कनैयालाल मुंशी" की लिखी हुई 'कृष्ण अवतार', "श्री पन्नालाल पटेल" की 'मानवी नी भवाई', "श्री झवेरचंद मेघानी" की 'सौराष्ट्र नी रासधार', "श्री गोवर्धन त्रिपाठी" की 'सरस्वतीचन्द्र'...इस कहानी पर तो हिंदी फिल्म बनी और बहुत ही मशहूर हो गई। ऐसे तो बहुत ही सारे गुजराती लेखक हैं...श्री चद्रकांत बक्शी, कुंदनिका कापड़िया, वर्षा अदलजा...आदि....। कवि नरसिंह मेहता, कवि नर्मद तो बहुत ही मशहूर हैं, जिन्होंने 1873 में "जयजय गरवी गुजरात" कविता लिखी थी, जो आज तक भी सभी याद कर रहे हैं। अगर आप लोगों ने नहीं सुना है तो एक बार यू-ट्यूब में देखिए-सुनिए, बहुत मजा आएगा। इन सभी गुजराती लेखकों-लेखिकाओं पर मुझे बहुत ही गर्व महसूस होता है।

अभी आप को ले चलूँगी ...गुजरात के प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों पर...कहाँ जाएंगे सबसे पहले? तो सब से पहले 'देवभूमि द्वारका' जाएंगे जो भगवान 'श्री कृष्ण' यानी 'माधवराई की भूमि'...कितना पुराना...कितने सालों से ये प्रचलित है। बहुत ही अच्छा मंदिर, सागर किनारे....घूमने लायक एक जगह...

उसके बाद ले चलती हूँ...'सोमनाथ'..."जय भोलेनाथ"....भगवान "शिवजी" के 12 ज्योतिर्लिंगों में सबसे प्रथम "सोमनाथ" का नाम...जिसके ऊपर महमूद गजनी ने 17 बार चढ़ाई की...मंदिर को तोड़ने के लिए, लूट भी की...कितनी बार मरम्मत करनी पड़ी, बाद में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने मंदिर के टूटे हुए बांधकाम में मरम्मत करवाई और आज भारत के सभी राज्यों से लोग "शिवजी" के दर्शन करने आते हैं। दूसरा ज्योतिर्लिंग "नागेश्वर" ...जो हमारी देवभूमि द्वारका के पास स्थित है.....सोचिए जरा 12 ज्योतिर्लिंग में से दो ज्योतिर्लिंग तो गुजरात में ही हैं। ऐसे तो कई पर्यटक स्थल हैं...गुजरात में...जैसे...गांधीनगर का "अक्षरधाम मंदिर", मेहसाना जिले में स्थित मोढेरा का "सूर्य मंदिर", जो सूर्य-भगवान को समर्पित है। इसकी नक्काशी शानदार और इसका सूर्य कुंड भव्य है। अहमदाबाद की "झूलती मीनार", अहमदाबाद का ही "साबरमती आश्रम" हमारे राष्ट्रपिता "महात्मा गांधी जी" जहाँ पर गांधी जी 1917 से लेकर 1930 तक अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरबा के साथ रहे थे "नर्मदा किनारा", "दीव" का दरिया किनारा, "सिद्धपुर पाटण" रानी की वाव, "सापुतारा", "जूनागढ़" का "गिरनार" पर्वत...जिस पर हमारे कार्यालय की पत्रिका का नाम "गिरनार" रखा है... तो इसे तो हम भूल सकते ही नहीं....जहाँ पर्वत के ऊपर 'अंबा माँ' का मंदिर है और अभी तो मंदिर तक पहुँचने के लिए उड़न खटोला बनाया हुआ है, और जूनागढ़ का ही "सासण-गीर" का जंगल, वहाँ तो बच्चों से लेकर बुजुर्गों को भी आनंद आता है। इसमें रहते 'जंगलो का राजा...'शेर'...दुनिया भर में ये शेर प्रचलित हैं। उसका मैं आपको मेरा अनुभव बताना चाहती हूँ। जब गूगल का जमाना नहीं आया था तब की ये बात है। बहुत साल पहले मैं घूमने के लिए गुवाहाटी जो असम में स्थित है, वहाँ भी काजीरंगा जंगल बहुत मशहूर है, तो वहाँ एक विदेशी प्रवासी मिल गए थे... ऐसे ही हम एक-दूसरे के साथ बात कर रहे थे, और उनको पता चला कि हम गुजरात से आए हैं, तो तुरंत ही वो बोले कि..."अरे! आप तो 'शेर' की भूमि से आ रहे हैं!" और हमारे पास से पूरी जानकारी ले ली कि 'सासण' कैसे पहुँचना होता है, कब जाना अच्छा होता है, आदि.....क्योंकि तब गूगल का जमाना नहीं था, सिर्फ पुस्तक पढ़ने से ही जानकारी मिलती थी और मैं ही गाइड बन गई। अभी आप सब को मजा आया घूमने का ?

आज के भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की बात न करें तो मेरे जैसा मूर्ख गुजराती कोई नहीं होगा। वो भी गुजरात के छोटे से गाँव में जन्मे...और कहाँ से कहाँ पहुँच गए! पूरे भारत की शक्ल ही बदल



डाली, दुनिया भर में सुप्रसिद्ध हो गए। ऐसे हमारे “मोदी जी” गुजरात के राष्ट्रपिता, लौह पुरुष, गुजरात की प्रतिभाएँ, प्रतिमा, पर्यटक स्थलों, कलाकारों की....सब की बात कर ली। तो अब आप सब को थोड़ा विराम भी चाहिए न! आप को ले चलती हूँ 'अन्नपूर्णा देवी' के पास...तो क्या खाएँगे आप? सब से पहले फल खाएँगे...तलाला की केसर केरी (आम), या कच्छ की केरी या वलसाड की आफूस केरी, कच्छ की खारेक(खजूर), भावनगर के लाल अमरूद...क्या खाना पसंद करेंगे? अब गुजराती थाली तो खानी ही चाहिए...“थेपला, चापड़ी-उंधियू, पूरणपोली, ढोकला, खांडवी, हांडवों”...ये हो गया आपका भोजन... उसके बाद मिठाई तो लेनी ही पड़ेगी...तो क्या चाहते हो...श्रीखंड, लड्डू, दूधपाक, खीर...चलो कोई बात नहीं...थोड़ा-थोड़ा सब का टेस्ट कर लीजिए और मजा कीजिए, और खाने के बाद खुश हुए की नहीं वो भी बताना...।

ये तो हुई गुजरात की बात। मैं गुजरात में 'राजकोट' में रहती हूँ तो उसके बारे में भी थोड़ी बात हो जाए। यहाँ की मशहूर पाठशाला - जहाँ श्री महात्मा गांधीजी की पढ़ाई हुई थी, वो पाठशाला अंग्रेज़ों के जमाने में 'आल्फ्रेड स्कूल' के नाम से प्रचलित थी, लेकिन उसके बाद 'मोहनदास करमचंद गांधी' नाम दिया गया, जहाँ पर आज बहुत ही बढ़िया म्यूज़ियम बनाया गया है जिसे सब लोग देखने आते हैं। उसके नज़दीक ही गांधीजी की धर्मपत्नी “कबा गांधी का डेला” वो भी मशहूर है। राजकोट में “श्री रामकृष्ण आश्रम” जो कि बेलूरमठ की हूबहू प्रतिकृति है। “श्री प्रमुख स्वामी” का स्वामीनारायण मंदिर, ज्यूबेली गार्डन में म्यूज़ियम, याज्ञिक रोड पर बना हुआ 'डॉल म्यूज़ियम' (अलग-अलग देश से लाई हुई पुतलियाँ हैं) और रेसकोर्स मैदान भी तो है, जहाँ घोड़ों की रेस तो अब नहीं होती, परंतु सुबह-सुबह कई लोग दौड़ने आते हैं, तो कोई चलने आते हैं, सिर्फ महिलाओं के लिए एक पार्क भी बनाया है, तैरने के लिए पूल भी है कितनी अच्छी सुविधाएँ राजकोट में हैं।

अभी राजकोट के मशहूर व्यंजन की बात...जय सियाराम के 'पेडे', लाबेला के गरमा-गरम फाफड़ा गाठिया, साथ-साथ जलेबी, संभारा, हरी मिर्च...और वो भी गाठिया-जलेबी के साथ मुफ्त में...हरी मिर्ची भी कैसी...जरा भी तीखी नहीं होती, बिलकुल गुजराती लोगों की तरह...। डायमंड की मूंगफली, गोवर्धनभाई-रसिकभाई का चेवडा और चटनी, सावन महीने में उसी की ही आलू की पेटिस, बजरंग का सोडा, जय भवानी का बर्फ का गोला, वो भी ड्राइफ्रूट वाला...तो बताइए जनाब...आप इसमें से क्या लेंगे ? आप एक बार राजकोट जरूर आइए और यहाँ पर घूमिए और एक के बाद एक टेस्ट करते जाइए और साथ साथ में सोने-चाँदी के थोड़े जेवरात भी खरीदिए। आज के जमाने में सोने-चाँदी के दाम देखकर खरीदना मुश्किल तो है ही, लेकिन डिज़ाइन देखने में कहाँ हर्ज है !

अब आप ही बताइए...राजकोट की सब से बड़ी दो खासियतें हैं...एक तो ये कि चाहे जितनी भी गर्मी क्यूं न हो, 42 डिग्री ही क्यूं न हो...शाम के 7 बजे के बाद मौसम ठंडा हो जाता है, और दूसरी खासीयत? वो तो सोचिए...सोचिए... आप लोगों ने सुना ही होगा कि राजकोट का बाजार दोपहर 1 से 4 बजे तक बंद रहता है...क्यों भला? क्योंकि राजकोट के लोग दोपहर में वस्तुएं खरीदने नहीं निकलते। वैसे कहावत है कि “नींद हराम हो गई”...लेकिन राजकोट वालों की दोपहर की नींद कोई हराम नहीं कर सकता। ऐसे है हमारे राजकोट वाले शांति प्रिय...

ऐसा है “गुजरात”...जहां शांति पसंद करने वाले लोग रहते हैं...और साथ में महान लोगों को भी कभी नहीं भूलेंगे...जिन्होंने हिंदुस्तान की आजादी के लिए पूरे जीवन का बलिदान ही दे दिया।...गुजराती कवि श्री नर्मद की लिखी हुई कविता- 'जय जय गरवी गुजरात' के साथ यहाँ समापन करती हूँ।



गुजराती साहित्य एक परिचय

श्री सुखदेव गोयल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



भाषा के द्वारा अनुभव तथा ज्ञान पर आधारित व्याख्यात्मक, तथ्यात्मक और विशिष्ट शैली परक कोष को ही साहित्य कहा जाता है। साहित्य शब्द मूलतः संस्कृत के सहित शब्द में यत प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ है शब्द और भाव का सटीक संयोजन।

साहित्य समाज का दर्पण होता है तथा समाज का आकलन उपलब्ध तात्कालिक साहित्य के आधार पर ही किया जाता है। भारत के हर क्षेत्र का अपना एक विशेष आंचलिक साहित्य है। गुजराती भाषा आधुनिक आर्य भाषाओं में से एक है तथा इसका विकास नगर अपभ्रंश से हुआ है। गुजराती भाषा की लिपि गुजराती है जो की नागरी भाषा से व्युत्पन्न हुई है।

गुजराती साहित्य का इतिहास इस भाषा को आठवीं अनुसूची में सन् 1950 में मिली मान्यता से भी काफी पुरातन है। विद्वानों और अध्ययन प्राप्त जानकारी के आधार पर, गुजराती साहित्य के लेखन सर्वप्रथम जैन लेखकों द्वारा किया गया था, जिसके अंतर्गत रास कविताएँ थी जो मुख्यतः वीर और प्रेम रस पर आधारित कथात्मक प्रकृति की थी। गुजराती साहित्य के प्रथम कवि नरसी मेहता (नरसी भगत) तथा प्रथम लेखक नर्मद को माना जाता है। नरसी भगत को गुजराती भक्ति साहित्य की श्रेष्ठ विभूति माना जाता है।

गुजराती साहित्य को कालक्रम के अनुसार मुख्यतः मध्ययुगीन साहित्य और अर्वाचीन युग साहित्य, दो भागों में बांटा गया है; मध्यकालीन साहित्य के प्रमुख रचनाकारों में श्रीधर कवि, प्रेमानंद भट्ट, कवि ब्रह्मानंद तथा स्वामीनारायण सम्प्रदाय से सम्बन्धित लेखकों को माना जाता है। इस काल की प्रमुख रचनाओं में रणमलछंद, भरतबाहुबलिरास, रेवंतदास, थूलिभदृफाग, नेमिनाथ चौपाई आदि को माना है।

गुजराती साहित्य के आधुनिक युग का जनक कवि नर्मदा शंकर (नर्मद) को माना जाता है। आधुनिक गुजराती साहित्य के प्रसिद्ध पुरस्कार विजेता गोवर्धनराम त्रिपाठी, महात्मा गांधी, के.एम. मुंशी, उमाशंकर जोशी, सुरेश जोशी, पन्नालाल पटेल और राजेंद्र केशवलाल शाह हैं।

साहित्य अकादमी की ओर से गुजराती भाषा में साहित्य अकादमी पुरस्कार-2021 हेतु यज्ञेश दवे की कविता संग्रह "गंध मंजूषा" को चुना गया है। गुजराती साहित्य अपने आप में अनूठा है तथा इसके अध्ययन मात्र से ही गुजरात की विशेष छवि हमारे मन पटल पर उभरती है।

अंततः यह कहना न्यायोचित ही होगा कि क्षेत्रीय भाषाओं और उनके साहित्य के विकास के साथ ही राजभाषा का विकास हो सकता है। अतः गुजराती साहित्य में निरंतर उन्नति के फलस्वरूप ही देश में व्यापक स्तर पर राजभाषा का संघ के कार्यों में प्रगामी प्रयोग बढ़ने के आसार है।



लौह पुरुष सरदार पटेल “एकता” के एक नए रूप में “स्टैच्यू ऑफ यूनिटी”

श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक



राज्य की संक्षेप रूप में भौगोलिक जानकारी:-

गुजरात राज्य भारत के पश्चिम में स्थित भारत का एक प्रमुख राज्य है, जिसके समुद्र तट की लंबाई 1,600 कि.मी.(990 मील) है, जो भारत के किसी भी तटवर्तीय राज्य की लंबाइयों में सबसे अधिक है। क्षेत्रफल के हिसाब से यह देश का पांचवा सबसे बड़ा राज्य है वर्तमान में इसका क्षेत्रफल 1,96,024 कि.मी. है। जबकि जनसंख्या के अनुसार यह 9वें स्थान पर आता है और 2013 की रिपोर्ट के अनुसार इसकी जनसंख्या 6.27 करोड़ थी।

गुजरात के उत्तर-पूर्व में दादरा और नगर हवेली है, तो दक्षिण में दमन और दीव स्थित है। दक्षिण-पूर्व में महाराष्ट्र है तो पूर्व में मध्य प्रदेश और अरब सागर है जबकि पश्चिम में पाकिस्तानी प्रांत सिंध से लगा हुआ है। इसकी राजधानी गांधीनगर है जबकि इस राज्य का सबसे बड़ा शहर अहमदाबाद है और वर्तमान में इसमें 33 जिले हैं।

राज्य की संक्षेप रूप में सांस्कृतिक जानकारी:-

गुजरात राज्य, भारत के पश्चिम में स्थित सांस्कृतिक खूबियों से परिपूर्ण बसा एक राज्य है। जैसे कि यहाँ का खानपान बहुत ही प्रसिद्ध है, थेपला, फाफड़ा और मीठा तो यहाँ के लोग बहुत ही पसंद करते हैं। लोग बहुत ही मिलनसार हैं। इस राज्य से ही हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी भी संबंध रखते हैं। यहाँ का डांडिया एक बहुत ही प्रसिद्ध एक सांस्कृतिक नृत्य है, जो कि अक्तूबर माह में आने वाले नवरात्र में जगह-जगह पंडालों में खेला जाता है और देखा जा सकता है। युवा लड़के और लड़कियां इस खेल में बहुत ही उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। जब यह खेला जाता है तो इसकी



खूबसूरती देखते ही बनती है। यहाँ सौराष्ट्र में पतंग महोत्सव भी बहुत ही प्रसिद्ध है। उस दिन लोग बड़े-बड़े आकार की पतंग उड़ाते हैं।

यूँ तो हर जगह और हर राज्य का उसके जन्म से लेकर निर्माण होते हुए उसके वर्तमान के अस्तित्व में होने तक उसका अपना एक इतिहास रहता है, क्योंकि समय के साथ-साथ सब विकसित होता चला जाता है और आज हमारे सामने वही जगह, वही राज्य एक दिन वर्तमान स्थिति में अवलोकन, पठन और उससे जुड़े तमाम सत्यों से परिपूर्ण होकर एक नई छवि प्रस्तुत करता है।

एकता के प्रतीक रूप में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी अभियान यात्रा:- जैसा कि हम सभी को विदित है और बल्कि हम सभी को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को भी इस तथ्य का ज्ञान है कि अभी हाल ही में गुजरात राज्य की शान में एक और उपलब्धि जुड़ गई है अर्थात् राज्य में विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा के रूप में माननीय सरदार पटेल जी की लौह से निर्मित 182 फुट ऊंची प्रतिमा का सरदार सरोवर बांध से 3.2 किमी की दूरी पर स्थित साधू बेट नामक स्थान पर अनावरण किया गया है। जोकि उक्त स्थान नर्मदा नदी पर एक टापू के रूप में है। यह स्थान गुजरात राज्य के भरुच के निकट नर्मदा जिले में स्थित है।

विश्व में सबसे ऊंची प्रतिमा के रूप में स्थापित:- इसके निर्माण की कहानी बहुत ही रोचक है। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा 31 अक्टूबर 2013 को इसी स्थान पर सरदार पटेल जी के जन्म दिवस पर ही बनने वाली इस भव्य प्रतिमा का शिलान्यास किया गया था। अब यह विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा के रूप में जानी जाती है, जिसकी लंबाई 182 मीटर है अगर फिट में होने की बात कहे तो यह (597) फुट है। इससे पहले विश्व में दूसरी सबसे ऊंची मूर्ति के रूप में चीन में स्प्रिंग टैंपल बुद्ध है, जिसकी लंबाई की बात करें तो उसकी ऊंचाई 153 मीटर अर्थात् (502) फुट है। जो निसंदेह इस मूर्ति के बनने से पहले विश्व में सबसे ऊंची प्रतिमा के रूप में जानी जाती रही होगी।

प्रतिमा निर्माण की घोषणा एवं उसका अनावरण:- शुरुआत में इस परियोजना की कुल लागत भारत सरकार द्वारा लगभग रु.3000 करोड़ रखी गई थी, परंतु, लार्सन एंड टूब्रो ने वर्ष 2014 में सबसे कम बोली लगाते हुए अर्थात् रु.2,989 करोड़ की बोली लगाते हुए इस परियोजना का निर्माण कार्य अपने नाम कर लिया। इस प्रतिमा का निर्माण कार्य भी इनके जन्मदिवस पर अर्थात् 31 अक्टूबर 2013 को प्रारंभ हुआ और प्रतिमा का निर्माण कार्य अक्टूबर 2018 के मध्य तक चला और प्रतिमा का उद्घाटन हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के कर-कमलों द्वारा 31 अक्टूबर 2018 को ही सरदार पटेल जी के जन्मदिवस पर किया गया।

प्रतिमा हेतु सामग्री जुटाने का लक्ष्य:- प्रतिमा की निर्माण यात्रा में थोड़ा आगे बढ़ते हुए यह ज्ञात होता है कि इस परियोजना की घोषणा गुजरात सरकार द्वारा 07 अक्टूबर 2010 को ही कर दी गई थी। जैसा कि सरदार पटेल जी को संपूर्ण भारत वर्ष में लौह पुरुष के रूप में जाना जाता है तो यह विषय भी बड़ा ही रोचक है कि इस पूरी प्रतिमा के निर्माण में पूरे भारत के गांवों में रहने वाले किसानों से खेती के काम में आने वाले पुराने और बेकार हो चुके औजारों को एकत्रित कर इसके लिए सामग्री के रूप में जुटाया गया। सरदार वल्लभभाई पटेल जी के नाम से एक ट्रस्ट भी बनाया गया जिसे हम “सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय एकता ट्रस्ट” के नाम से भी जानते हैं। इसके निर्माण हेतु पूरे भारत वर्ष से लगभग 5 लाख किसानों से लोहा जुटाने का लक्ष्य रखा गया था। इस अभियान को एक नया नाम देते हुए इसका नाम “स्टैच्यू ऑफ यूनिटी अभियान” रखा गया। लगभग 3 महीने चले इस लंबे अभियान में 6 लाख ग्रामीणों ने लोहे को उपलब्ध करवाया जो कुल मिलाकर लगभग 5,000 मीट्रिक टन लोहे के संग्रह के रूप में रहा। हालांकि,

शुरुआत में यह घोषित किया गया था कि इस संग्रहित लोहे का प्रयोग मुख्य प्रतिमा में किया जाएगा परंतु यह लोहा उक्त उद्देश्य में प्रयुक्त नहीं हो सका और अन्य निर्माण कार्यों में इसका प्रयोग किया गया।

सुराज प्रार्थना पत्र और रन फॉर यूनिटी :- प्रतिमा के निर्माण अभियान से एक “सुराज” प्रार्थना पत्र भी बना जिसमें जनता अपनी राय लिख सकती थी और इस पर 2 करोड़ लोगों ने अपने हस्ताक्षर किए जो कि विश्व के सबसे बड़े एक प्रार्थना पत्र के रूप में सामने आया। इसके अतिरिक्त, 15 दिसंबर 2013 को एक “रन फॉर यूनिटी” नामक एक मैराथन का भी पूरे भारत वर्ष में आयोजन किया गया था। जिसमें बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लेकर इस मैराथन को सफल बनाया।

प्रतिमा के विषय में जानकारी:- आधार सहित इस मूर्ति की कुल ऊंचाई 240 मीटर है जिसमें 58 मीटर का आधार है तथा 182 मीटर की प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर इस्पात, सांचे, प्रबलित कंक्रीट और कांस्य का लेपन किया गया है। स्मारक तक पहुंचने के लिए लिफ्ट की व्यवस्था भी की गई है। मूर्ति के त्रि-स्तरीय आधार में, प्रदर्शनी और फ्लोर और छज्जा शामिल है। छत पर स्मारक उपवन, एक बड़ा संग्रहालय और एक प्रदर्शनी हॉल है, जिसमें सरदार पटेल जी के जीवन को दर्शाया गया है। इसके साथ ही 500 फीट ऊंचा एक निरीक्षण डेस्क का भी निर्माण किया गया है जिसमें एक ही समय में 200 लोग प्रतिमा का निरीक्षण कर सकते हैं। नाव के जरिए प्रतिमा तक 5 मिनट में पहुँचा जा सकता है। साथ ही एक आधुनिक प्लाजा का निर्माण भी किया गया है, जिससे नर्मदा नदी और प्रतिमा एक साथ देखी जा सकती है। इसमें खान-पान के स्टॉल, उपहार की दुकानें और रिटेल व अन्य सुविधाएं शामिल है, जिससे वहाँ पर्यटन और वहाँ के लोगों के लिए रोजगार, दोनों का ही विकास हुआ है।

स्मारक के निर्माण हेतु केंद्र एवं राज्य सरकार की भूमिका:- स्मारक का निर्माण भारत सरकार और गुजरात सरकार के सार्वजनिक और निजी साझेदारी के माध्यम से हुआ है। इसमें अधिकांश भाग गुजरात सरकार का है अर्थात गुजरात सरकार ने वर्ष 2012-13 में इसके निर्माण हेतु रु.100 करोड और वर्ष 2014-15 में रु. 500 करोड का योगदान दिया जबकि भारत सरकार की ओर से इसके निर्माण हेतु 2 अरब रुपये आवंटित किए गए थे। इस मूर्ति के निर्माण हेतु टर्नर कंस्ट्रक्शन (बुर्ज खलीफा) के परियोजना प्रबंधक की सहायता ली गई। इसके निर्माण में लगभग 5 सालों का समय लगा। परियोजना पर कुल 2,063 करोड रुपयों का व्यय हुआ। अमरीकी डॉलर के रूप में बात करें तो लगभग 301.2 मिलीयन अमरीकी डॉलर का व्यय हुआ।

सरदार पटेल जी का भारत की एकता में योगदान:- इसके अतिरिक्त, सरदार पटेल जिनकी भव्य प्रतिमा गुजरात राज्य में स्थापित की गई इनकी स्वतंत्रता संग्राम में क्या भूमिका रही है इससे हम सब भलिभांति परिचित हैं। आज जो हम पूरे भारत को एक संगठित रूप में देखते हैं, ये सब सरदार पटेल जी के अथक प्रयासों का ही परिणाम है, जिन्होंने पूरे देश को एक होने का न केवल स्वप्न देखा बल्कि उसे साकार भी किया। जैसा कि ज्ञात है कि आजादी से पूर्व हमारा पूरा देश 562 देशी रियासतों में बंटा हुआ था। आजादी के बाद तो लगभग सभी देशी रियासतें एक हो गई थी परंतु हैदराबाद, जूनागढ़ तथा कश्मीर जैसी रियासतें भारत में सम्मिलित नहीं होना चाहती थी। वे अपना अस्तित्व अलग ही रखना चाहती थी। परंतु, उस समय की तात्कालिक परिस्थितियों को देखते हुए कुछ कठोर कदम भी उठाने पड़े। जैसे कि कश्मीर तो एक समझौते के तहत भारत में विलय के तैयार हो गया परंतु, हैदराबाद को भारत में पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई (ऑपरेशन पोलो) के परिणामस्वरूप भारत में विलय किया गया था। इसी तरह, जूनागढ़ रियासत के भारत में विलय को लेकर सरदार पटेल जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जूनागढ़ के नवाब ने वहाँ की जनता से बिना पूछे जूनागढ़ को पाकिस्तान में शामिल करने का निर्णय ले लिया तब वहाँ की 80% हिंदू आबादी ने

इसका विरोध किया तथा वहाँ के नवाब के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया जिससे वहाँ का नवाब घबराकर पाकिस्तान चला गया तथा उसके पश्चात जनमत के आधार पर जूनागढ़ की जनता ने भारत में विलय होने के लिए इच्छा व्यक्त की जिसके आधार पर उस समय रहे नवाब द्वारा लिखे गए पत्र के आधार पर जूनागढ़ को भारत में 9 नवंबर 1947 को विलय कर दिया गया। इस तरह इन तीनों रियासतों का भारत में विलय करने में सरदार वल्लभभाई पटेल जी का बहुत अधिक योगदान रहा है।

बारडोली सत्याग्रह की सफलता पर वहाँ की महिलाओं द्वारा उन्हें **“सरदार”** नाम की उपाधि से सुशोभित किया गया था। वे एक ठूंड संकल्प वाले राजनेता थे, भारत की जनता उन्हें हृदय से प्रेम करती थी। आजाद भारत की पहली सरकार में वे देश के पहले उप प्रधानमंत्री के साथ-साथ वे देश के गृह, सूचना तथा रियासत विभाग के मंत्री भी बने। 15 दिसंबर 1950 को बंबई में उनका निधन हुआ। 41 वर्षों के बाद सन 1991 में भारत सरकार द्वारा उन्हें देश का सबसे बड़ा सिविल सम्मान “भारत रत्न” प्रदान किया गया, जिसे उनके पौत्र विपिनभाई पटेल ने स्वीकार किया।

आजादी के बाद देश के एकीकरण में रही उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के कारण सरदार पटेल जी को भारत का 'बिस्मार्क' अर्थात् 'लौह पुरुष' के नाम की संज्ञा से भी नवाजा गया। विश्व के इतिहास में कोई भी ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं हुआ है, जिसने इतनी बड़ी संख्या में देश के राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो।

सरदार पटेल जी जैसे महान व्यक्तित्व वाले राजनेता के जन्मदिवस को देश के राष्ट्रीय एकीकरण योगदान देने के परिणामस्वरूप ही प्रति वर्ष 31 अक्टूबर को, राष्ट्रीय एकता दिवस (National Unity Day) के रूप में मनाया जाता है। जिसकी शुरुआत वर्ष 2014 से की गई थी।

भारत के लौह पुरुष के रूप में पहचाने जाने वाले सरदार पटेल जी को तत्कालीन भारत की आजादी के संघर्ष में अपने अविस्मरणीय योगदान तथा आजादी के पश्चात् भारत के एकीकरण के लिए उन्हें शत-शत नमन। ... (स्तोत्र : इंटरनेट)



मोढेरा सूर्य मंदिर

एक अनोखी किरण

श्री प्रशांत सिंह
सहायक लेखा अधिकारी



आधुनिक इतिहासकारों ने कुछ अनोखे, विचित्र वास्तुकला वाली संरचनाओं का उतने प्रभावशाली तरीके से वर्णन नहीं किया जितना की ताजमहल, लाल किले एवं अन्य स्मारकों का किया गया है। ऐसी ही एक प्रभावशाली वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण है, मोढेरा का 'सूर्य मंदिर'।

गुजरात के मेहसाना जिले के मोढेरा में अवस्थित यह मंदिर स्थापत्य की विचित्र शैली से ओत-प्रोत है। मारू गुर्जर शैली में बना यह मोढेरा का सूर्य मंदिर चालुक्य राजा भीमदेव प्रथम द्वारा बनवाया गया था। यँ तो भारत में सूर्य मंदिरों का इतिहास ही रहा है जैसे कि कोणार्क का सूर्य मंदिर, मुल्तान का सूर्य मंदिर (पाकिस्तान), कश्मीर में स्थित मार्तंड सूर्य मंदिर एवं इसी श्रेणी में बनाया गया गुजरात का यह मंदिर।

इसकी एक खास विशेषता यह भी है कि यह 23.5 डिग्री उत्तरी गोलार्ध में एवं लगभग कर्क रेखा जहाँ से गुजरती है, के नजदीक पड़ता है। गूगल के इस युग में आज हम जब चाहे किसी भी जगह के कोर्डिनेट्स पता करके वहाँ की अवस्थिति का पता लगा सकते हैं, परन्तु यह उस समय अर्थात् 1026 ई. में इतनी बेहतर समझ एवं वैज्ञानिकता के साथ वास्तुकारों द्वारा बारीक अध्ययन करके इसका निर्माण करवाया जाना वाकई कमाल का है। मान्यता के अनुसार सूर्य की पहली किरण उ. गो. के सबसे बड़े दिन यानि 21 जून को नृत्य मंडप से होकर इस मंदिर के गर्भगृह में भगवान सूर्य की प्रतिमा के मुकुट के ऊपर लगी मणि पर पड़ती थी जिससे पूरा मंदिर जगमगा जाता था, यह अनोखी चीज इस बात का साक्ष्य है कि हमारी प्राचीन वास्तुकारों को न केवल खगोलशास्त्र का अपितु ज्यामितिक का भी ज्ञान था।

तीन भागों में बँटा यह मंदिर सूर्यकुंड, नृत्यमंडप एवं गर्भगृह वास्तुकला का ऐसा जीता-जागता उदाहरण है कि जिसको देखने भर मात्र से मन में विचारशील प्रश्न कौंधने लगे। मंदिर का एक भाग सूर्यकुंड ज्यामितिक का असाधारण नमूना है जिसका पानी कभी नहीं सूखता एवं इसमें छोटे-बड़े 108 मंदिर हैं जिसके पीछे का वैज्ञानिक तर्क यह है कि जिसमें 12 राशियाँ, 9 नक्षत्र की गुणा करने पर यह प्राप्त होता है एवं अन्य भी तर्क विद्यमान हैं।



इस सूर्यकुंड के लिए बनी सीढ़ियों की ज्यामितिक संरचना भी मन मोह लेने वाली है। मान्यतानुसार जब भी कोई यहाँ पर आराधना के लिए आता था तो वह इस कुंड में स्नान उपरांत ही मंदिर में प्रवेश करता था क्योंकि इसको बनाते समय 7 समुद्रों एवं कई पवित्र नदियों के पानी को यहाँ पर डाला गया था।

मंदिर का दूसरा भाग जो कि नृत्य मंडप है वहाँ प्रतीकों के माध्यम से कैलेंडर के दिनों, सप्ताहों, महिनों के बारे में बताया गया है। उदाहरणतः मंदिर में अवस्थित 52 स्तम्भ 52 सप्ताह के बारे में बतलाते हैं एवं स्तम्भ में गढ़े हुए 364 हाथी एवं 1 सिंह, वर्ष के 365 दिनों के बारे में ध्यान इंगित करते हैं। यहाँ पर बने हुए सभी स्तम्भ रामायण एवं महाभारत में घटित घटनाओं की कुछ-न-कुछ तो कहानी अवश्य बयाँ करते हैं जिनका बड़ा सजीव-सा चित्रण किया गया है। मंदिर की दीवारों, छतों एवं स्तम्भों पर नक्काशी का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है।

तीसरा भाग जो कि गर्भगृह है कि महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि यहाँ पर दसों दिशाओं सनातन धर्मानुसार, का वर्णन किया गया है एवं जीवन के चार स्वरूपों धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष को मूर्तियों के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है। सूर्य, वरूण, पवन, वीणा-वादिनी आदि देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित पुष्पावती नदी के किनारे स्थित यह सूर्य मंदिर मंत्रमुग्ध कर देने वाला है।

वैज्ञानिक दृष्टि से इस सूर्य मंदिर की वास्तुकला वाकई हम भारतीयों को गर्व की अनुभूति कराती है। इस अनूठे मंदिर की मनमोहक अनुभूति को यहाँ शब्दों के माध्यम से पिरो पाना संभव नहीं है, इसके साथ न्याय करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से यहाँ भ्रमण अनिवार्य हो जाता है, और हो-ना-हो प्रत्यक्ष भ्रमण के बाद आप कुछ और कहानियाँ इसमें जोड़ ही लेंगे। ... सत्यमेव जयते



राजकोट की पहचान

श्री दीपक परमार

एम.टी.एस.



राजकोट की पहचान
राजकोट के लोग हैं रंगीले,
सर्दी में भी खाते हैं बर्फ के गोले।
राज सब मन के हैं खोले,
पीठ के पीछे कभी न बोले।

दिवाली हो या फिर होली के रंग,
घुल-मिल जाते हैं जैसे शरबत के रंग।
अजीब है यह जिंदगी के ढंग,
लगता नहीं यहाँ कभी खुशियों पे जंग।

सावन में लगते हैं जनमाष्टमी के मेले,
भूला देते हैं जिंदगी के सारे झमेले।

मन में रखते हैं इतनी उमंग,
जैसे खुले आसमान में उड़ती कोई पतंग।

मदद के लिए अंजानों का बन कर संबल
सर्द रातों में फुटपातियों पर न जाने कौन ओढ़ जाता है कंबल।
राजकोट है सौराष्ट्र की राजधानी,
ना मुमकिन यहाँ कुछ भी नहीं, जो मन में एक बार ठानी।

व्यापार-उद्योग और मशीनरी की है नगरी,
सोने-चाँदी और रुपए से भरी है जिसकी गगरी।
देश के सौ स्मार्ट सिटी में किया है जिसको शामिल,
एम्स और अंतरराष्ट्रीय हवाई-अड्डा संभाले उतना काबिल।

खानी-पीना और मौज-मस्ती बस यही काम
रोज दोपहर दो से चार बजे आराम।
बस आगे इतना ही कहना
राजकोट है गुजरात का महना।



“गुजरात का पतंग महोत्सव”

सुश्री नीलम

(पत्नी श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल)

व. हिंदी अनुवादक



वैसे तो पतंग उड़ाना किसे अच्छा नहीं लगता है! हमने भी अपने बचपन में खूब पतंगे उड़ाई भी और लूटी भी और यकीनन कहा जा सकता है कि हम सबके जीवन में भी ऐसी यादें भी जरूर जुड़ी होंगी और ऐसा भी नहीं है कि अब हम बड़े हो गए हैं तो अब पतंग नहीं उड़ा सकते हैं, बल्कि अब भी हम यदि किसी दूसरे व्यक्ति को पतंग उड़ाते देखते हैं तो हमारा मन भी पतंग उड़ाने का बन ही जाता है और हम भी पूरी तैयारियाँ करके ऊपर आकाश में अन्य पतंगों के बीच अपनी पतंग चढ़ा ही देते हैं। कोई छोटी पतंग उड़ाता है तो कोई बड़ी। कोई पूँछ लगा कर पतंग उड़ाता है तो कोई किसी अन्य आकार की पतंग उड़ाता हुआ दिखता है।

अब चाहे वो पूरे देश में पंद्रह अगस्त स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला त्योहार का अवसर हो, या गुजरात में संक्रांति के उपलक्ष्य में पतंग उड़ाने का समय हो। सभी त्योहारों पर जब पतंगे उड़ाई जाती है और जब नीले-नीले आकाश में रंग-बिरंगी पतंगे उड़ती हैं तो आकाश की सुंदरता देखते ही बनती है। चारों तरफ पतंगें ही पतंगें होती हैं। हर कोई उन पतंगों को उड़ाने में इतना मस्त हो जाता है कि न तो खाने-पीने का और न ही समय का ध्यान रहता है। हर कोई बस अपनी पतंग को ऊपर रखना चाहता है और दूसरे की पतंग को काटना चाहता है। जब दो पतंगों के आपस में पेच लड़ रहे होते हैं तो वो समा भी अलग ही होता है। उस क्षण अगर एक बार चोट भी लग जाए तो भी उसका ध्यान न करते हुए सारा ध्यान पतंग काटने और अपनी पतंग को बचाने में ही लगा रहता है। इस पतंगबाजी में एक मजेदार बात यह भी है कि इस पतंगबाजी में हमें एक सहायक भी चाहिए होता है जो जब हम पतंग उड़ाए तो वह उस पतंग के लिए चरखी पकड़ कर रखे और पतंग कटने पर दूसरी पतंग तैयार करके भी रखें।

जैसा कि यह तो सभी को विदित है कि पुराणों और कथाओं के अनुसार दिनांक 14 जनवरी को हमारे सूर्य देव मकर राशि में प्रवेश करते हैं। इस दिन सूर्य महाराज दक्षिणायन से उत्तरायण होना प्रारंभ कर देते हैं। जैसा कि यह भी सभी को ज्ञात होगा कि उस समय सर्दी अपने पूरे जोरों पर होती है, कि हर कोई



विशेषकर उत्तर भारतीय हाड कपा देने वाली सर्दी से परेशान भी होते हैं। कहते हैं कि जनवरी में तो सर्दी उन क्षेत्रों में गजब का सितम बढाती है, जिन क्षेत्रों में यह पड़ती है। सभी की यही कामना होती है कि बस पूरे दिन सूर्य महाराज का आशीर्वाद बना रहे और सूर्य से गर्मी प्राप्त होती रहे तो राहत मिलती रहेगी। इस दिन अर्थात् 14 जनवरी को हम पूरे भारत में मकर संक्रांति से के नाम से जानते हैं।

भारत के विभिन्न भागों में इस पर्व को भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे हिंदी भाषी राज्यों में इसे मकर संक्रांति के नाम से जानते हैं तो पंजाब में इसे लोहड़ी जो कि इससे ठीक एक दिन पहले अर्थात् 13 जनवरी को मनाए जाने वाले त्योहार के रूप में जानते हैं तो दक्षिण में इसे पोंगल के नाम से जानते हैं। कहीं-कहीं यह त्योहार तीन दिन भी मनाया जाता है। भले ही इस त्योहार को भिन्न-भिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता हो, परंतु, उद्देश्य एक ही होता है कि अपनी खुशी का इजहार करना। किसी शुभ समाचार की प्राप्ति पर अर्थात् जैसे कि सूर्य देव का दक्षिणायन से उत्तरायण होना जिससे सर्दी कम होने लगती है और चारों तरफ एक सुहाना मौसम होने लगता है, खेतों में फसलें पकने लगती है और आने वाले पर्व बैसाखी पर काटे जाने के लिए तैयार हो जाती है। इसके साथ ही हमारी आजादी की सूचना भी हमें 14 अगस्त की मध्य रात्रि को ही मिली थी, जब आजाद भारत में पहली बार तिरंगा फहराया गया था और यह उस समय की सबसे बड़ी खुशी का समाचार भी हमें रात्रि को ही प्राप्त हुआ था। हम प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस का त्योहार मनाते हैं, जिसका इजहार हमने खुशी मनाते हुए पतंग उड़ाने के रूप में अगले दिन किया था। इस तरह पतंग खुशी का पर्याय बन गई और तभी से अधिकतर इन अवसरों पर स्वतंत्रता दिवस और संक्रांति के अवसर पर पतंग उड़ाने की परंपरा का सूत्रपात हुआ जो आज भी बदस्तूर जारी है।

ऐसा भी कहा जाता है कि पतंग उड़ाने का रिवाज कोई आधुनिक भारत से ही नहीं माना जाता है बल्कि प्राचीन काल में भी इस परंपरा का निर्वाह हुआ करता था, जैसे कि तुलसीदास जी कृत ग्रंथ रामचरित मानस के एक दोहे में भगवान राम के द्वारा पतंग उड़ाने का एक वर्णन एक दोहे से मिलता है जैसे “राम एक दिन चंग उड़ाई, इंद्रलोक में पहुंची जाई”। दोहे का बिल्कुल ही साधारण शब्दों में अर्थ प्रकट होता है कि एक दिन भगवान ने अपने साथियों संग एक पतंग उड़ाई जो इंद्र लोक तक पहुंच गई। इस प्रकार देखें तो उक्त दोहे के अवलोकन स्वरूप हम कह सकते हैं कि प्राचीन काल में भी हमें पतंगबाजी का उल्लेख मिलता है।

“गुजरात में पतंगबाजी का महत्व (Significance of Kite Fying in Gujarat)”

ऐसा माना जाता है कि गुजरात में पतंग महोत्सव की शुरुआत के साथ-साथ राज्य में होने वाले 24 बड़े मेलों आयोजनों का दौर भी शुरू हो जाता है। कहते हैं कि इन सभी मेलों और त्योहारों के आयोजनों का मुख्य उद्देश्य राज्य की कला संस्कृति का न केवल पूरे भारत में बल्कि पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार करना होता है। इन मेलों में और खासकर इस पतंग महोत्सव में न केवल देश के पतंगबाज आते हैं बल्कि विदेशों से भी लोग आकर पतंगबाजी करते हैं और इस महोत्सव को मनाते हुए इसकी यादों का एक हिस्सा बन जाते हैं। लोग बहुत ही चाव से इस त्योहार को मनाते हैं।

मकर संक्रांति पर गुजरात में बड़े स्तर पर पतंगबाजी देखने को मिलती है। अगर पूरे गुजरात की भी बात करें तो सबसे ज्यादा उस दिन पतंगे अहमदाबाद और वडोदरा में उड़ाई जाती है। उस दिन यहाँ इसे एक बहुत ही लोकप्रिय पर्व के रूप में मनाया जाता है। उस दिन यहाँ सभी को पतंग उड़ाने का चाव रहता है,



चाहे वह कोई बच्चा हो, बूढ़ा हो या कोई जवान हो सभी मिलकर पतंग उड़ाते हैं। सभी पतंगबाजी में उलझे रहते हैं और इस दिन के आने से पूर्व वे इस दिन की तैयारियाँ भी करने लगते हैं जैसे तरह-तरह की ढेरों पतंगे और उन्हें उड़ाने के लिए मांजा (पतंग उड़ाने वाले धागों को मांजा कहा जाता है) बाजार से खरीदकर अपने घरों में एकत्रित करने लगते हैं।

इस दिन न केवल विशेष रूप से पतंगबाजी ही की जाती है बल्कि इस दिन खाने-पीने का भी विशेष महत्व होता है, जैसे एक ओर जहाँ उत्तर भारत में रेवड़ी, गज्जक और मूंगफली खाने का रिवाज ज्यादा है तो दूसरी ओर इस दिन यहाँ गुजरात में खिचड़ी में बहुत सी चीजों को मिलाया जाता है और उसे धीमी आंच पर पकाने के बाद खाया जाता है। इस दिन एक साथ सब्जियों को मिलाकर एक विशेष सब्जी बनाई जाती है, जिसे “ऊंधियु” कहते हैं। इस सारे भोजन का स्वाद पतंगबाजी के साथ लिया जाता है। इस विशेष सब्जी को चापड़ी (कठोर पूरी के जैसी) या बाजरे की रोटी के साथ खाया जाता है और साथ में दही से बनी छाछ भी पी जाती है। इस दिन गन्ने चूसने का और साथ ही मीठे बेर और जामफल (अमरूद) खाने का रिवाज भी बहुत है। कुल मिलाकर देखें तो इस दिन पतंगबाजी के साथ विशेष रूप से बने खाने और पीने का स्वाद भी लिया जाता है। यहाँ भी लोग गुड, रेवड़ी, गज्जक और अन्य मिठाइयों के सेवन के साथ-साथ इन वस्तुओं का दान भी करते हैं।

पतंगे न केवल दिन में उड़ाई जाती है बल्कि रात में भी पतंगे उड़ाई जाती है, ऐसी पतंगों को हम आम बोलचाल की भाषा में “लालटेन वाली पतंगें” कहते हैं, जिसमें पतंग एक गोले की आकार की होती है और बीच में उसमें एक मोम्बत्ती लगी होती है। ऐसी पतंगें दशहरा, दिवाली आदि त्योहारों पर भी खूब उड़ाई जाती हैं जो हम सहज रूप से उस समय उड़ते हुए देख सकते हैं। देखने में भी बहुत अच्छी लगती है। तारों से भरे गहरे नीले आकाश में ऐसा लगता है कि आकाश मार्ग से टिमटिमाती रोशनी से भरी कोई वस्तु एक जगह से दूसरी जगह जा रही हो। अगर एक साथ आपको ऐसी कई पतंगे उड़ते हुए देखने को मिल जाए तो निश्चित ही वो एक अलग मन को लुभाने वाला समा होता है।

जहाँ एक ओर इन पतंगों से चाहे रात में उड़ाए जाने वाली पतंगे हो या दिन में उड़ाई जाने वाली पतंगे हो अच्छी तो बहुत लगती है, परंतु, इस प्रकार की पतंगों से कई बार कुछ नुकसान होने की बातें भी सुनने को मिली है जैसे कि यदि वही लालटेन वाली पतंग अगर समय रहते न बुझे तो वही पतंग अगर जलते हुए किसी वस्तु, या घर या किसी व्यक्ति पर गिर जाए तो वही खुशी के इजहार वाली पतंग किसी बात के लिए और किसी के दुख का कारण भी बन जाती है। कहने का अभिप्राय यह है कि इन पतंगों को आकाश में ही बुझना जरूरी होता है ताकि यह पूरी तरह से वहीं आकाश में ही बुझ जाए और किसी पर जलती हुई ना गिरे और किसी का भी कोई नुकसान न हो। वहीं दूसरी ओर दिन में उड़ाई जाने वाली पतंगों के साथ भी एक नकारात्मक पहलू यह भी जुड़ा हुआ माना जाता है कि इन पतंगों को कटने के बाद लूटने के चक्कर में बच्चे चोट तक खा बैठते हैं और कई बार तो अपने हाथ-पैर भी तुड़वा लेते हैं। पतंग लूटने के चक्कर में लोगों की बीच झगड़ा होना तो एक आम बात हो गई है। लोग किसी कटी हुई पतंग को अपना बताने के लिए दूसरे लोगों से झगड़ा करने से भी पीछे नहीं हटते हैं। कई बार जब यही कटी हुई पतंग सड़कों पर चलते हुए वाहनों के बीच आ गिरती है तो वहाँ बच्चों के नुकसान होने का खतरा तो बना ही रहता है, साथ ही वाहन चालक भी कई बार किसी अप्रिय दुर्घटना तक का शिकार तक हो जाते हैं। यह भी इन पतंगों का एक बहुत बड़ा नकारात्मक पहलू है। यह एक अलग बात है कि ऐसी घटनाएं होने के बाद भी ऐसी पतंगों को उड़ाने का रिवाज आज भी जारी है।

इसके अतिरिक्त, आजकल जैसे-जैसे तकनीक आधुनिक होती जा रही है, तो वैसे-वैसे हमें हर क्षेत्र में नित नए प्रयोग और उत्पाद देखने को मिल रहे हैं। जैसे किसी जमाने में पतंग उड़ाने के लिए बच्चे तो

खासकर जो बहुत छोटे होते थे, वे पतंग उड़ाने के लिए केवल एक साधारण से धागे का इस्तेमाल करते थे, लेकिन आजकल तो ऐसे-ऐसे मांजे आ गए हैं जिससे आपको अक्सर पतंग के मांजे से गला कटने की घटनाएं देखने और सुनने को भी मिली होगी और वास्तव में देखे तो अब मांजे के रूप में ऐसे तेज धागे आ गए हैं कि यदि वो गले में लिपट जाए और गले और मांजे दोनों में विपरीत दिशा में जोर लगता दिखे और ऐसी स्थिति बढ़ती ही चली जाए तो समझो कि व्यक्ति का गला कटना तो तय है या काफी हद तक उस तेज मांजे से गले की नसें कट ही जाती हैं जिससे उस अमूक व्यक्ति का काफी हद तक नुकसान हो ही जाता है और यदि समय पर इलाज नहीं मिला तो कोई अप्रिय घटना भी घटने में देर नहीं लगती है।

पूरे देश में हम हर साल लाखों की संख्या में पतंग उड़ा कर अपनी आजादी के त्योहार को मनाते हैं। इस दिन के आने से पहले ही चारों तरफ बाजारों में रौनक लगने लग जाती है और एक अलग ही खुशी का अहसास होने लगता है। लगभग अधिकतर दुकाने पतंगों और उसको उड़ाने वाले मांजे और तरफ-तरह की सुंदर सजाने वाली वस्तुओं से सजी होती हैं। उन दिनों बाजार में छोटी से छोटी और बड़ी-बड़ी पतंगें मिल जाती हैं और उनके आकार के अनुसार ही उनके दाम रखे होते हैं। लोग अपनी इच्छानुसार उड़ाने के लिए पतंग खरीदते हैं। कभी-कभी तो पतंगबाजी के दौरान मजाक-मजाक में शर्ते भी लग जाती हैं, जैसे अगर मैंने तेरी सारी पतंग काटी तो तू मुझे इस बात की पार्टी देगा और अगर मैं हारा तो भी तू मुझे पार्टी देगा। ऐसा केवल त्योहार को और भी अधिक हंसी-खुशी के मनाने के उद्देश्य से ही किया जाता है, इसके पीछे कोई गलत उद्देश्य नहीं होता है, केवल और केवल मनोरंजन हेतु ही शर्ते लगती हैं।

ऐसा नहीं है कि पतंगबाजी से हानि का पक्ष ही जुड़ा हुआ है, इसका एक अच्छा पहलू भी यह है कि पतंग उद्योग से जुड़े लोगों के लिए ऐसे आयोजन किसी पैसा बनाने की मशीन से कम नहीं होते हैं। वे ऐसे में इनके लिए पैसा बनाने का काम करते हैं, वो ऐसे कि जब-जब ऐसे आयोजन का समय नजदीक आता है तो इस उद्योग से जुड़े लोगों के लिए यह समय काफी लाभप्रद रहता है, बाजारों में पतंगों की और मांजों की मांग बढ़ जाती है, तरह-तरह के आकार की पतंगें बनाई जाती हैं, जो देखने में अद्भुत और सुंदर होने के साथ-साथ ऊँचे दामों की होती हैं। जो लोग पतंगबाजी के शौकीन होते हैं वो इनका दाम नहीं देखते हैं और इन्हें खरीदने से भी पीछे नहीं हटते हैं और मुँह मांगे दामों पर पतंग और मांजा खरीद लेते हैं। इस प्रकार इन लोगों को उस समय अच्छी आमदनी होती है और उनके काम में तेजी आती है और उनका कारोबार तेज गति से चलने लगता है और वे खूब पैसा कमाते हैं।

इस प्रकार देखें तो, पतंग महोत्सव से जुड़ी अनेक बातें हमें देखने को मिलती हैं। इनमें कुछ अच्छी और कुछ हानिकारक भी हैं। परंतु, अगर इसके सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान दें तो ज्ञात होगा कि यह पतंग महोत्सव भाई-चारे की भावना के साथ-साथ खुशहाली और एकता के प्रतीक के रूप में भी जाना जाता है। ऐसे आयोजनों से लोगों में एक दूसरे के प्रति भाई-चारे की भावना का विकास होता है। लोग अपने क्षेत्र की बंधी हुई सीमा से आगे निकलकर दूसरी जगह के लोगों के साथ खुशी-खुशी यह त्योहार मनाते हैं। जैसे भारत के लोगों के साथ-साथ यहाँ विदेशों के लोग भी आकर इस महोत्सव में भाग लेते हैं और भारतीय लोगों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति को करीब से जानते हैं। इस प्रकार, यह महोत्सव अब भाई-चारे और चारों ओर खुशहाली और एकता के प्रतीक के रूप में भी पहचाना जाने लगा है।

कभी समय मिले तो जरूर गुजरात आकर इस पतंग महोत्सव का हिस्सा बनिए, तो यकीनन आपके जीवन की सुनहरी यादों की कड़ी में इसकी यादें भी एक कड़ी के रूप में और जुड़ जाएगी।

'मारु राजकोट'

सुश्री स्वाति कुमार

हिंदी अधिकारी



इस लेख के शीर्षक में मैंने 'मारु' शब्द का उपयोग किया है, आप ये न समझें कि क्या मैं राजकोट को मारने को कह रही हूँ...न... न...। गुजराती में 'मारु' का अर्थ है 'मेरा', है तो ये सबका किंतु मैं अपनेपन के हक से कह रही हूँ कि यह मेरा है। क्योंकि कहने को तो हम बहुत सी जगह जाते रहते हैं; और वहाँ कभी कुछ पल के लिए रुकते हैं, तो कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हम उस एक ही जगह पर कई साल तक ठहर जाते हैं। जीवन है यूँ ही चलता रहता है। पर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हमारा मन किसी खास जगह के लिए अटक सा जाता है, मानो कि हमें वो जगह बार-बार पुकार रही हो, जैसे उसकी मिट्टी की महक हमें उसकी ओर खींच रही हो। मेरी भी कुछ ऐसी ही कहानी सी बन गई है। कहते हैं कि जहाँ मन हो वहाँ हम कभी न कभी किसी न किसी तरह से पहुँच ही जाते हैं। ये जीवन चक्र है या कोई रहस्य या प्रकृति का खेल ! ऐसा ही एक वाक्या मेरे साथ हुआ जो कुछ इस तरह का था।

यह उस समय की बात है जब हमारा छोटा सा परिवार दिल्ली में रहता था। मेरे पिताजी पेशे से इंजीनियर हैं, जीवन की गाड़ी तेज रफ्तार से अपनी दिशा में चल रही थी। फिर एक दिन कंपनी की ओर से उनकी अधिकारी के रूप में पदोन्नति हुई और साथ ही गुजरात स्थानांतरण का आदेश हो गया। अब गुजरात में कहाँ ! तो पता चला 'राजकोट' जिसे 'मिनी मुंबई' के नाम से भी जाना जाता है। पिताजी के मन में ये विचार आने लगे कि कहां एक ओर तो दिल्ली महानगर है और कहां दूसरी ओर राजकोट छोटा सा विकासशील शहर। मम्मी-पापा के मन में अनजाना सा भय भी था कि वहाँ कैसे रहेंगे, लोग कैसे होंगे और तो और कई रिश्तेदार भी दिल्ली में थे, वहाँ तो कोई भी अपना नहीं था, फिर मेरी स्कूलिंग भी वहीं से आरंभ करनी थी। हालांकि मैं बहुत ही छोटी थी तो इतनी ज्यादा भावनाएं तो नहीं थी, दिल्ली छोड़ने का गम आदि से अनजान थी क्योंकि ये सब सोचना तो मेरे अभिभावकों का कार्य था, वाकई बाल्यावस्था कितनी अदभुत होती है।

अब राजकोट के बारे में हमने कुछ जानकारी हासिल करना शुरू किया जैसे यह शहर अपने रेशम के काम, सोने के आभूषण और घड़ी के पुर्जों के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर महात्मा गांधी का घर भी हुआ करता था क्योंकि उन्होंने अपने बचपन के शुरुआती दिन यहीं बिताए थे, स्कूली पढ़ाई यहीं की थी आदि।

और इस तरह हमारी राजकोट की यात्रा शुरू हो गई और हम ट्रेन से राजकोट पहुँच ही गए, मकान किराए पर ले लिया, छोटा मगर सुंदर। मकान ने मन मोह लिया था क्योंकि उसके आंगन में काफी जमीन थी जिसमें बहुत से पौधे थे, फूल खिल रहे थे और बड़ा सा गुलमोहर का पेड़ था जो कई पक्षियों का बसेरा था और मकान के पीछे एक अमरूद का पेड़ था जिसके मीठे अमरूद खाने के लिए तोते आते थे और उस पेड़ को मैं राखी बांधने लगी थी जैसे

कि वो मेरा भाई हो। मकान को घर बनते देर नहीं लगी। पापा को बागबानी का बहुत शौक था, तो उन्होंने कई रंग-बिरंगे फूलों के पौधे लगाए। यह मेरा मिनी गार्डन था। मैं भी मिट्टी के खिलौने बनाकर खेलती थी। धीरे-धीरे आस-पड़ोस में सबसे परिचय हो गया। लोग बहुत ही सीधा-सादा जीवन जीते थे और बहुत ही भाईचारे से रहते थे।

यहां सड़कें भी कच्ची ही थी जो गाँव सा एहसास दिलाती थी। सर्दी, गर्मी या बरसात में कीचड़ हो तब भी हम बच्चे गली में खेलते थे, जैसे पूरी गली हमारा परिवार हो, हम बच्चे खेलते रहते थे और गायें भी घूमती रहती थीं जैसे वे भी हमारे साथ खेल रही हों।

इस बीच मैंने राजकोट की कई अनोखी चीजें देखीं जैसे...जब भी कोई सब्जी वाला गली से सब्जी बेचने के लिए पुकारता था “हालो...” तो गली का एक कुत्ता उसी राग में आवाज निकालता और कई कुत्ते सब्जी वाले के पीछे-पीछे जाते। हम समझ नहीं पाते कि कुत्ते उसके पीछे क्यों जाते हैं, पता चला कि यहां लोग कुत्तों को टमाटर खिलाते हैं क्योंकि वे टमाटरों के शौकीन हैं, लोग न दें तो वे खुद ही ठेले से टमाटर चुरा लेते हैं।

जब भी किसी की शव यात्रा सड़क पर निकलती है, तो धर्म, जाति का ध्यान न रखकर प्रत्येक राहगीर चाहे पैदल चल रहा हो या वाहन पर हो तो वहीं रुक जाते हैं, लोग घरों से निकलकर देखते हैं, उनकी आत्मा की शांति के लिए एवं सम्मान देने हेतु प्रार्थना करते हैं।

यहाँ पर सभी पुरुषों, लड़कों के नाम के साथ 'भाई' शब्द जुड़ता है जैसे किसी का नाम महेश हो तो महेशभाई, उसी तरह औरतों और लड़कियों के नाम के साथ 'बेन' अर्थात बहन शब्द जुड़ जाता है जैसे किसी का नाम सविता हो तो सविताबेन बोलते हैं। अगर हम अपना नाम भी किसी दुकान, कार्यालय आदि में बताते हैं तो वे भाई या बेन शब्द जोड़कर ही लिखते हैं, जैसे ये यहां की रीत हो।

इस शहर को 'रंगीलो राजकोट' भी कहते हैं क्योंकि यह अपनी जीवन शैली, भोजन, नाइटलाइफ, त्योहार समारोह और मेलों आदि के लिए बहुत प्रसिद्ध है। राजकोट का अपना ऐतिहासिक महत्व भी है। यहाँ लोग बहुत हंसमुख स्वभाव के होते हैं और यहाँ का आतिथ्य बहुत अच्छा है। लोग जीवन को मस्ती से गुजारते हैं, उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं उसे भी लोग संभाल लेते हैं और खुश होने का कोई भी मौका नहीं गंवाते।

जन्माष्टमी का त्योहार यहाँ बहुत ही प्रसिद्ध है जिसमें खास मेला लगता है, जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री के कर-कमलों से किया जाता है, गुजरात के अन्य जगह के लोग भी इस मेले को देखने आते हैं। इस त्योहार पर 4-5 दिन स्कूल, कॉलेज बंद होते हैं, बाजार और दुकानें भी बंद होती हैं। इस दिन श्रीकृष्ण की रथयात्रा भी निकलती है, जिसे देखने के लिए भीड़ उमड़ती है।

यहाँ की पहली बारिश पर बच्चों से लेकर बूढ़े तक अपने-अपने घरों से बाहर आ जाते हैं और बारिश का आनंद उठाते हैं।

यहाँ पर रोजाना अधिकतर दुकानें दोपहर 1 से 4 बजे तक बंद रहती हैं, सभी आराम करते हैं। देर रात तक घरों के बाहर बैठकर गपशप करते हैं। किसी के घर में कोई दुख हो तो दूसरे लोग जो शायद उन्हें जानते भी न हों तब भी मदद के लिए तैयार रहते हैं। पैसों के मामले में बहुत पक्के होते हैं वहीं दूसरी ओर मदद के मामले में बहुत ही उदार होते हैं। चाय की दुकान पहले खुले न खुले पान-तंबाकू की दुकानें जरूर खुल जाती हैं।

एक बार हमें बाहर गांव जाना था तब घर का ताला खराब हो गया था, तो पिताजी ने एक बाजार से दूसरे बाजार जाकर ताला खोजा पर कहीं नहीं मिला। क्योंकि यहां चोरी-डकैती का डर ही नहीं था। पड़ोसी कहते “यूं ही कुंडी लगा दो, कुछ नहीं होगा।”



ऐसा माना जाता है कि जब हम किसी जगह पर होते हैं तो हमारा नजरिया, हमारी सोच यही होनी चाहिए कि हम वहां की अच्छी चीजों को अपनाए, सकारात्मक पहलुओं पर ही ध्यान दें तभी हमें वह जगह और लोग अच्छे लगते हैं और हम भी कुछ अच्छा सीख पाते हैं।

वक्त बीतते पता नहीं चलता है, साल पंछी बन उड़ने लगते हैं। कब एक अनजानी जगह, अजनबी लोग अपने हो जाते हैं पता ही नहीं चलता। पड़ोसी कब रिश्तेदार से बन गए पता ही नहीं चला, गली में साथ खेलने वाले बच्चे कब भाई-बहन बन गए और स्कूल में पढ़ने वाले सहपाठी सच्चे मित्र बन गए पता ही नहीं चला। यहां की संस्कृति, भाषा सब जैसे हममें घुल गए थे, मन पूरी तरह यहाँ रच-बस सा गया था।

अब तक हमने आठ सावन देख लिए थे कि फिर से पापा का स्थानांतरण गुजरात के बाहर हो गया। अब यहाँ से जाना बहुत ही मुश्किल लगा, भावनाएं बहने लगीं। जहाँ अपना पूरा बचपन बिताया हो, बचपन के साथी हों, वो स्कूल, वो घर, सबको छोड़ना इतना आसान नहीं होता। कहते हैं न कि जहाँ बचपन गुजरता है वहीं मन रच-बस जाता है, हम वहीं के हो जाते हैं, हमारी आदतें भी वैसे ही हो जाती हैं। ऐसे लगा जैसे हम सैनिक हों जिसका कोई ठिकाना नहीं। पर जीवन तो चलने और आगे बढ़ते रहने का ही नाम है, जो हमें बहुत कुछ सिखाता है, परिपक्व बनाता है, हिम्मत जगाता है और सकारात्मकता को साथ लिए आशावादी बनाता है।

हम इन्हीं सब विचारों को लिए 25 दिवाली मना चुके थे। अब मैं चेन्नई में रहकर प्रधान महालेखाकार कार्यालय में नौकरी कर रही थी। राजकोट छोड़ने के बाद भी मेरे मन में कई बार वहाँ का ख्याल आता रहता था, वहां के सपने आते थे, वहां के लोगों को याद करती थी। पर कभी भी दुबारा वहां जाने के बारे में नहीं सोचा था। कोई उम्मीद भी नहीं थी वहाँ जाने की, पर मन में एक कसक जरूर रहती थी कि काश! कभी वहाँ जा पाऊं, मेरे पुराने मित्रों से मिल पाऊं, जिस स्कूल में पढ़ी, मेरे पति व ससुराल वालों को दिखा पाऊं।

एक बार चेन्नई कार्यालय में हमारे संवर्ग के लोगों के स्थानांतरण की बातें चल रही थीं, तो किसी ने मुझसे पूछा यदि आपका स्थानांतरण हुआ तो कहां जाना चाहेंगी, तो मैंने मजाक में 'राजकोट' कह दिया। मुझे लगा कि तबादला तो होगा नहीं। इसी संदर्भ में मेरे साथ रुचिपूर्ण घटना घटी...प्रकृति का संकेत कहें या ईश्वरीय शक्ति के दर्शन...

मैं मेरे परिवार के साथ केरल घूमने गई हुई थी। वहां के एक पर्यटन स्थल में हम बैठे हुए थे। मैं और मेरी भांजी बातें कर रहे थे कि अचानक उसने मुझसे पूछा कि क्या मुझे गुजराती आती है, मैंने कहा 'हां, समझ तो सब लूंगी पर शायद बोल न पाऊं', चूंकि कई साल हो चुके थे। तभी एक महिला अपने परिवार के साथ वहां आई तो मेरी भांजी बोली ये गुजराती लगते हैं (जबकि उसने किसी गुजराती को कभी देखा नहीं था), मैंने कहा 'नहीं-नहीं कहीं और के होंगे'। पर जब उस महिला ने अपने साथ आए सदस्यों से बात की तो पता चला कि वे तो गुजराती हैं। खैर बात आई गई हो गई, अगले दिन हम वहां के एक सुप्रसिद्ध मंदिर गए। दर्शन करके हम बाहर निकले ही थे कि मुझे सूचना मिली कि मेरा स्थानांतरण हो गया है... "राजकोट", मेरे कानों को यकीन ही नहीं हो रहा था, मुझे लगा कोई गलतफहमी हो शायद, फिर कार्यालय आदेश व्हाट्सएप पर मंगवाया, तब जाकर यकीन हुआ।

मेरे पति व ससुराल वाले कभी दक्षिण भारत से बाहर नहीं गए थे, न ही उन्हें हिंदी आती थी। तो इस कारण वे सभी घबराए हुए थे। मैं भी समझ नहीं पा रही थी कि क्या करूं, क्या निर्णय करूं। सबके अंदर बहुत ही डर था कि कैसे जाएंगे, क्या करेंगे, आवेदन भेज दूं, छुट्टी ले लूं या नौकरी छोड़ दूं। तय किया कि जो भी है वो घर जाकर तय करेंगे। उस रात हमारी ट्रेन थी चेन्नई के लिए और हम सब रेलवे स्टेशन के उस प्लेटफॉर्म पर खड़े थे जहां हमारी ट्रेन के आने की घोषणा की जा रही थी। तभी ट्रेन के आने की आवाज़ सुनाई दी तो हम सभी सामान लेकर तैयार हो गए। लेकिन ये क्या ! ये तो कोई दूसरी ट्रेन थी, बोर्ड देखा तो जामनगर लिखा था। मैंने सबको बताया कि ये ट्रेन गुजरात



जा रही है तो पहले तो किसी को भरोसा नहीं हुआ फिर सब आश्चर्य में पड़ गए। तभी हमारा ध्यान गया कि हम जहाँ खड़े थे वहाँ बड़े-बड़े बक्से रखे थे जिसके ऊपर पार्सल भेजने का पता लिखा था और बड़े अक्षरों में 'राजकोट' लिखा था, हम सभी के रोंगटे खड़े हो गए थे कि ये कैसा संकेत है...! हमने कई यात्राएं की हैं दक्षिण भारत में लेकिन आज तक गुजरात जाने वाली ट्रेन नहीं देखी और जबकि चेन्नई जाने वाली ट्रेन की घोषणा हो रही थी, इस ट्रेन की घोषणा तो हुई भी नहीं थी। हम समझ गए कि ये ईश्वरीय कहें या प्रकृति के संकेत हैं कि चाहे कुछ भी कहें या कर लें पर जाना तो है ही। ईश्वर में आस्था होने के कारण सभी ने ये मान लिया कि एक बार ड्यूटी ज्वाइन कर लीया जाए, आगे देखा जाएगा।

घर आकर यह तय हुआ कि चूंकि मेरे माता-पिता को हिंदी आती है और हम पहले भी वहां रह चुके हैं तो शायद भाषा आदि की तकलीफ उतनी नहीं होगी, तो हम हवाई जहाज से राजकोट पहुँचे। दूर काफी पड़ता है, दो फ्लाइटें बदलनी पड़ी। पर जब इस धरती पर पैर रखा तो जो सुकून महसूस हुआ वो अवर्णनीय था। हालांकि अपने परिवार से दूर होने का दुख बहुत था फिर भी एक अंदरूनी खुशी थी, बचपन की यादें जो साथ थीं। यहां मेरे बचपन की सबसे पक्की सहेली रहती थी, उसके बहुत आग्रह करने पर हम सीधा उसके घर पहुँचे। 25 साल बाद, बिना किसी उम्मीद के, जिसके मिलने की आशा न के बराबर थी, जब मैं उससे और उसके परिवार वालों से मिली तो आँखों से खुशी की धारा बहने लगी थी, इस अहसास को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता था।

मेरे माता-पिता के साथ, हम उस जगह गए जहां हम पहले रहते थे, अब भी वही लोग वहां रहते थे, लोगों ने मेरे माता-पिता को तुरंत पहचान लिया और भाव-विभोर होकर स्वागत किया। वही अपनापन, आत्मीयता, न जाने कैसा अनमोल पल था, पुरानी बातों को फिर से एकबार जी लिया। मैं मेरी स्कूल की एक सहेली से भी मिली, ऐसे लगा मानो दुनिया की कोई अनमोल चीज मिल गई हो। फिर उसके साथ छुट्टी वाले दिन अपने स्कूल जाकर, हर कक्षा में जाकर तस्वीरें खिंची। एक दिन अपनी प्रिंसिपल से भी जाकर मिली (उन्हें याद दिलाने के बाद उन्होंने पहचान लिया) और उनके पैर छूकर प्रणाम किया। ऐसे अनूठे अहसास जीवन में नई ताज़गी, नई उमंग, ढेरों खुशियां और सकारात्मकता से ओत-प्रोत कर देते हैं।

लोगों की भावनाएं वही थी, पर कस्बा सा दिखने वाला राजकोट अब शहर बन चुका था, कच्ची सड़कों की जगह पक्की सड़कों ने ले ली थी जिस पर बड़ी-बड़ी गाड़ियां सरपट दौड़ने लगीं थी। जहां जंगल सा मैदान हुआ करता था वहां अब बहु मंजिला इमारतें खड़ी थीं। कई पुल बन रहे थे, भव्य होटल खुल चुके थे। ये सब तो होना ही था 1-2 साल की बात नहीं रजत जयंती हो गई थी अर्थात् 25 साल। शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार के स्मार्ट सिटी मिशन के तहत जून 2015 में शुरू की गई 100 स्मार्ट शहरों की सूची में राजकोट का नाम भी है। यह भारत के शीर्ष 10 सबसे स्वच्छ शहरों में भी स्थान रखता है। मेन रोड के चौराहों पर बैठने के लिए बेंच बनाई गई हैं जहाँ बुजुर्ग आदमी तैयार हो कर अपना समय व्यतीत करने वहाँ आकर बैठते हैं।

यहाँ का खास आकर्षण रेस कोर्स मैदान है। इस मैदान में विभिन्न गतिविधियों के लिए लोगों की सुविधा, मनोरंजन हेतु कई स्थान बनाए गए हैं, जैसे- पार्क, बच्चों के खेलने हेतु अलग झूलों वाला पार्क, बच्चों व बड़ों के लिए अलग-अलग इलेक्ट्रॉनिक झूलों के पार्क, महिलाओं के लिए गार्डन, हॉकी ग्राउंड, वाकिंग ट्रेक, घुड़सवारी, नक्षत्र-भवन (प्लेनेटोरियम), कार/स्कूटर ड्राइविंग क्लास, बच्चों के लिए चित्रकला, विज्ञान संबंधी चीजें सीखना आदि हैं। बड़े शहरों में ऐसे मनोरंजन क्षेत्र शहर से बाहरी इलाकों में बनाये जाते हैं जबकि यहाँ ये शहर के बीच में है जिससे लोगों को सुविधा होती है, जब चाहे जा सकें। एक बार रात को 1.30 बजे हम रेलवे स्टेशन जा रहे थे तो हम अचंभित हो गए ये देखकर कि लोग अपने परिवार के साथ रेस कोर्स में आराम से बैठकर बतिया रहे हैं। इसका अर्थ यह भी हुआ कि यह स्थान कितना सुरक्षित भी है। रात में बाहर निकलने में डर नहीं लगता है। महिलाएं भी रात को निडरता से बाहर जा सकती हैं।



और भी कई बातें हैं जो मुझे बहुत ही अच्छी लगीं जैसे ; यहां के लोग पशु-पक्षियों का भी बहुत ख्याल रखते हैं जैसे पक्षियों के लिए भुट्टे(मकई) को पेड़ की डाली में लगाते हैं, चिड़ियों के लिए घोंसले घर/पेड़ों की डाली पर लटकाते हैं, कबूतरों को रोज बगीचे में दाना डालते हैं, चींटियों के लिए आटा, चूहों/गिलहरियों के लिए नमकीन डालते हैं ।

घर के आंगन की दीवारों पर पक्षियों के पीने के लिए पानी रखते हैं, घर के बाहर छोटे-छोटे कुंड जैसे बना रखे हैं जिसमें गायों के पीने के लिए पानी भरते हैं, गायों को खिलाने के लिए बर्तन रखते हैं, सब्जियों के छिलकों को गायों को खिलाते हैं, चारा भी खरीदकर खिलाते हैं, गली के कुत्तों को भी खाना खिलाते हैं । ये तो हुआ पशुओं के लिए, मानव सहायता के रूप में यहां कई जगह बड़े-बड़े मटके भी रखे हैं जो कई राहगीरों/श्रमिकों की प्यास बुझाते हैं ।

यहां के लोग आपस में एक-दूसरे को मिलने पर हाय-हैलो या नमस्ते न कहकर- पुरुष वर्ग आपस में 'महादेव', 'जय राम जी', 'बापा सीताराम', 'जय स्वामीनारायण' और महिलाएं 'जय श्री कृष्ण' 'जय जिनेन्द्र' आदि कहते हैं । लोग एक-दूसरे से जल्दी घुल-मिल जाते हैं और एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी बन जाते हैं ।

देखते-देखते यहाँ मेरे चार साल बीत गए हैं, अब फिर पड़ोसी रिश्तेदार से लगने लगे हैं, फिर सहकर्मी मित्र बन गए हैं। न जाने और कब-तक का दाना-पानी लिखा है। ये सभी पल सुखद यादें बनकर सदा साथ रहेंगी। नमन करती हूँ इस प्रकृति को जिसने मुझे दुबारा यहां आने का सौभाग्य दिया। धन्यवाद करती हूँ यहां के लोगों का जिन्होंने मेरे हर सुख-दुख में साथ दिया। नाज़ है इस 'सौराष्ट्र की नगरी' पर। शायद इसीलिए कहते हैं कि दुनिया गोल है ...!!
!!!

‘रंगीलो’ राजकोट

नाम से है राजा की कोटी, स्मार्ट सिटी की है ये नगरी।

है न गाँव न बड़ा शहर, देखो इसे मेरी ही नजर।

कहते हैं इसे रंगीला, अपने-आप में है निराला।

लोगों में है भाई-चारे की भावना, बनाए रखते हैं सद्भावना।

बारिश में घरों से बाहर आते हैं बच्चे,

खूब खेलते, कूदते, झूमते हैं मन के ये सच्चे।

गांधी जी का पाठ स्थान, रेस कोर्स है यहाँ की शान।

सूर्य देव को जल चढ़ाना, गायों को चारा खिलाना,

पक्षियों को दाना देना, कुत्तों को भी दूध पिलाना।

नौ रात्रि में गरबा खेलना, जन्माष्टमी में मेला लगना

राजकोट है पुण्य नगरी, यह सबके मन को हरती।

कार्यालय के विभिन्न कार्यकलाप व कल्याण गतिविधियाँ

- कल्याण अनुभाग द्वारा वर्ष के दौरान विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
- कैंटीन द्वारा कार्यालय के सभी कर्मचारियों के लिए कोरोना माहमारी को ध्यान में रखते हुए रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु निःशुल्क काढ़ा का सेवन करवाया गया।
- लेखा एवं लेखापरीक्षा के दोनों कार्यालयों के कर्मिकों के बच्चों के लिए शिशुगृह की व्यवस्था भी है।
- कार्यालय के किसी मृतक कर्मचारी के परिवार के सदस्यों को हितकारी निधि प्रदान कर सहायता दी जाती है।
- कार्यालय के कर्मिकों के लिए समय-समय पर विभिन्न स्वास्थ्य विषयों पर व्याख्यान या मेडिकल कैंपों द्वारा लाभान्वित किया जाता है।
- अंध ध्वज दिवस मनाया जाता है जिसमें नेत्रहीन लोगों के लिए कार्यालय के कर्मिकों से अंशदान एकत्रित करके अंशदान दिया जाता है।
- राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भावना दिवस के लिए कार्यालय के कर्मिकों से अंशदान एकत्रित करके अंशदान दिया जाता है।
- अन्य कार्यक्रम जैसे -
- योगा दिवस में कार्यालय के कर्मिकों के लिए योग के विशेषज्ञ द्वारा योग का अभ्यास करवाया जाता है।
- नौरात्रि में कार्यालय के कर्मिकों के लिए 'रास-गरबा' का आयोजन किया गया जिसमें कर्मिक व उनके परिवार भी सम्मिलित हुए।
- प्रत्येक माह सेवानिवृत्त होने वाले कर्मिकों के लिए सेवानिवृत्ति समारोह आयोजित किए जाते हैं।
- शहीद दिवस पर दो मिनट का मौन रखा जाता है।
- कार्यालय के कर्मिकों के लिए अग्निशमन का व्यवहारिक ज्ञान दिलवाया गया।
- मनोरंजन क्लब द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं खेल-कूद गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। साथ ही अखिल भारतीय सिविल सेवा टूर्नामेंट में भी भागीदारी की जाती है।
- लेखापरीक्षा दिवस (ऑडिट-डे) के उपलक्ष्य में ऑडिट-वॉक का आयोजन किया गया।
- 1.दि.22.11.2022 को ऑडिट जागरूकता सप्ताह वॉक टू महात्मा गांधी म्यूजियम एवं वॉक बैक टू ऑफिस।
- 2.दि. 25.11.2022 को प्रमुख स्वामी महाराज ऑडिटोरियम में सांस्कृतिक कार्यक्रम।

कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा-2022 की संक्षिप्त रिपोर्ट

राजभाषा विभाग के कार्यालय आदेश संख्या 12016/19/2022-रा.भा.(का-२) दिनांक 04-08-22 के अनुसरण में कार्यालय में हिंदी पखवाड़े-2022 का आयोजन किया गया। 14 सितंबर को हिंदी दिवस तथा 15 सितंबर को सूरत, गुजरात में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन में कार्यालय से हिंदी अनुभाग के कार्मिकों द्वारा सहभागिता के पश्चात दिनांक 19-09-2022 से विभिन्न प्रतियोगिताओं का शुभारंभ **श्री सजी थॉमस** (व. उप महालेखाकार/प्रशासन) के कर-कमलों से दीप-प्रज्ज्वलन करके किया गया।

इस अवसर पर **श्री सजी थॉमस** (व. उप महालेखाकार/प्रशासन) ने सभी कार्मिकों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी तथा हिंदी दिवस की महत्वाता से अवगत करवाया तथा प्रतियोगिताओं में खूब बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए सभी से आह्वान किया।

पखवाड़े के दौरान, दि. 19-09-2022 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता, 20-09-2022 को हिंदी कविता-लेखन, 21-09-2022 को अनुवाद एवं टिप्पणी लेखन, 22-09-2022 को राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-लेखन, 23-09-2022 को हिंदी वाद-विवाद (पक्ष-विपक्ष) तथा 26-09-2022 को हिंदी गीत-गायन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। सभी प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कारों के अतिरिक्त चतुर्थ एवं पंचम क्रमांक पर प्रोत्साहन पुरस्कारों के स्वरूप प्रमाणपत्र के रूप में कुल 30 विजेताओं ने पुरस्कार प्राप्त किए। इन आयोजित प्रतियोगिताओं में कार्यालय से कुल 78 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दि. 29-09-2022 को समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसका विवरण निम्नानुसार है; पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिता हेतु बनाए गए बैनरों को हॉल में सजाया गया। एक बड़ा बैनर लगाकर सेल्फी पॉइंट बनाया गया, ताकि सभी कार्मिक फोटो खींच सकें। हिंदी संबंधी स्लोगन दीवारों पर लगाए गए। वरिष्ठ अधिकारीगण एवं विजेता प्रतिभागियों के बैठने की विशेष व्यवस्था की गई।

श्री बिरेन डी. परमार (प्रधान महालेखाकार) और **श्री सजी थॉमस** (व. उप महालेखाकार/प्रशासन) ने अपने कर-कमलों से दीप-प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर, **श्री सुनिल.जे.पारेख** (व.लेखा अधिकारी/हिंदी) तथा अन्य अधिकारी व कर्मचारी गण उपस्थित थे। कार्यालय के कार्मिकों द्वारा प्रार्थना गीत के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया।

प्रधान महालेखाकार एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार द्वारा विजेताओं को पुरस्कारस्वरूप प्रमाणपत्र वितरित किए गए। **श्री थॉमस सजी** (व.उप महालेखाकार) द्वारा **माननीय गृह मंत्री** का राजभाषा संदेश का पठन किया गया।

अध्यक्षीय संबोधन में **श्री बिरेन डी. परमार** (प्रधान महालेखाकार) ने सर्वप्रथम वहाँ उपस्थित सभी कार्मिकों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी, विजेताओं को बधाई दी, हिंदी अनुभाग से जुड़े सभी कार्मिकों को पखवाड़े और इस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु बधाई दी। उन्होंने आह्वान किया कि अधिक से अधिक कार्यालयी कार्य राजभाषा हिंदी में करें और राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करें या, प्राप्त लक्ष्यों को बनाए रखें तथा राजभाषा हिंदी से जुड़ें व इसके और अपने ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार करें। उन्होंने कार्मिकों को बताया कि चूंकि यह कार्यालय लेखा से संबंधित कार्य करता है जिसमें आंकड़े एवं तथ्यों से संबंधित लेखा-जोखा का कार्य किया जाता है, अतः जीवन को सुचारु, रोचक बनाने, प्रतिभा निखारने के लिए 'भाषा' एक महत्वपूर्ण कड़ी है। भाषा की महत्ता पर जोर देते हुए महोदय ने बताया कि किसी भी भाषा को सीखें, समझें, लिखें और पढ़ें, स्वीकार करें और हिचकिचाएं नहीं। उन्होंने दर्शकों को हिंदी साहित्य के बारे में कई रोचक बातों से अवगत करवाया। पुस्तकों की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य की पुस्तकें और अन्य पुस्तकें भी पढ़ते रहना चाहिए ताकि ज्ञान का स्तर बढ़ता रहे और जीवन भी अनुशासित रहे।

सूरत गुजरात में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के चित्रों का एक पोस्टर बनवाकर सभी दर्शकों को प्रस्तुत किया गया तथा इस समारोह की महत्ता वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी द्वारा बताई गई।

श्री हसेन मलेक (सेवानिवृत्त) द्वारा समापन समारोह का संचालन शानदार तरीके से किया गया। कार्यक्रम में बीच-बीच में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे शास्त्रीय नृत्य, अन्य प्रकार के नृत्यों की प्रस्तुति की गई और श्री हसेन मलेक द्वारा स्टैंड-अप कॉमेडी भी प्रस्तुत की गई। गीत-गायन प्रतियोगिता के श्रेष्ठ तीन विजेताओं ने भी गीत गाए।

श्री एस.जे.पारेख (वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया जिसमें उन्होंने प्रधान महालेखाकार से लेकर दर्शकगण एवं इस पखवाड़े हेतु कार्यरत प्रत्येक कार्मिक को धन्यवाद व्यक्त किया।

राजभाषा के प्रचार हेतु सेल्फी पॉइंट बनाए गए ताकि कार्यालय के कार्मिक इसका लाभ उठा सकें और उसमें रुचि बनी रहे। **सुश्री स्वाति कुमार** (हिंदी अधिकारी), **श्री बिजेन्द्र बेरवाल** (वरिष्ठ अनुवादक) तथा अन्य सहकर्मियों ने कार्यक्रम की सफलतार्थ सार्थक प्रयास किए। जल-पान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।



कार्यालय के कार्मिकों के बच्चों द्वारा की गई चित्रकारी



श्रीवर्धन नायर
सुपुत्र
सुश्री जीजा कुरुप



मुकुल बेरवाल
सुपुत्र
श्री बिजेन्द्र कुमार





नवरात्रि आरती

सेवानिवृत्त विदाई समारोह



महिला दिवस - २०२२



योगा दिवस की झलकीयाँ



नवरात्रि की झलकीयाँ

नगर राजभाषा कार्यालयन समिति द्वारा प्रथम शील्ड प्राप्त करते हुए



वर्ष २०२१ के लिए - राजभाषा कार्यालयन में **प्रथम पुरस्कार**।
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) को
नगर राजभाषा कार्यालयन समिति (न.रा.का.स.) राजकोट द्वारा
राजकोट के ३८ कार्यालयों में से प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

स्मृति चिन्ह

१. श्री विरेन डी. परमार, प्रधान महालेखाकार
२. श्री सजी धोमस, वरिष्ठ उप महालेखाकार

सम्मान - पत्र

- श्री एस. जे. पारस्य, वरिष्ठ लेखा अधिकारी हिंदी
- श्री सुष्मा स्वाति कुमार, हिंदी अधिकारी
- श्री विजेंद्र कुमार, वरिष्ठ अनुवादक
- श्री राम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

ऑडिट सप्ताह

